

भारत माता के भाल पर मानबिंदु समान राष्ट्रपिता पूज्य महात्मा गांधीजी की जन्मभूमि पोरबंदर संतों, शूराओं, वीरांगनाओं, दानवीरों एवं सेवकों की लीलाभूमि है। यहां की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बडी ही समृद्ध है। भगवान श्रीकृष्ण के सखा सुदामा यहां के निवासी थे। इसलिये इस नगर को सुदामापुरी के नाम से भी जाना जाता है।

योगेश्वर श्रीकृष्ण के देवी रुक्मणी के साथ विवाह यहां माधवपुर में हुआ। राणावाव के पास प्राचीन जाम्बुवती गुफा में भगवान श्रीकृष्ण ने रामयुग के अपने साथी जाम्बुवान को दर्शन दिए और उनकी पुत्री जाम्बुवती से विवाह किया। मियाणी के समुद्र तट पर स्थित मां हरसिद्धि का मंदिर भी बहुत प्राचीन काल से आध्यात्मिकता का संदेश दे रहा है। हनुमानजी के वंशजों जेठवा वंश के राजाओं ने यहां सुशाशन और जनसेवा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्थापित किया है।

ऐसी पावन भूमि के समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास को पोरबंदर के जिला कलेक्टर श्री अशोक शर्मा ने 'मोहन से मोहन' पर्यावरण नाट्यकृति के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस नाट्यकृति से युवाओं को अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सम्भालने की प्रेरणा मिलेगी और यहां आनेवाले यात्री भी पोरबंदर की विरासत को जान पायेंगे।

मुझे विश्वास है कि यह नाट्यकृति भारत के सांस्कृतिक नवजागरण के यज्ञ में एक सुंदर भावांजलि बनेगी।

मे आशा करता हूं कि अपनी अभ्यास एवं सृजनयात्रा को लेखनी के माध्यम से श्री अशोक शर्मा अविरत रूप से जारी रखेंगे।

भपेन्द पटेल

मुख्यमंत्री, गुजरात राज्य

लेखक के अन्य सर्जन

- ज्योतिर्गमय: डॉ.आल्बर्ट आइन्स्टाइन के 'आइडियाझ ऐन्ड ओपिनियन्स' का गुजराती अनुवाद,
 (प्र.-विचारवलोण्ं, प्रथम आवृति-१९९५)
- २. शीलधारा : राष्ट्रीय चारित्र्य और रामायण विषय पर निबंध(प्र.-लोहाणा बाळाश्रम,प्रथम आवृति-१९९९)
- 3. जय गिरनार जय सोमनाथ :सोमनाथ और जुनागढ की ऐतिहासिक परंपरा की पर्यावरणीय नाट्य कृति(प्र.-सोमनाथ ट्रस्ट, प्रथम आवृति-२००६)
- ४. योग :अस्तित्व की आनंदयात्रा(प्र.-आर.आर.शेठ, प्रथम आवृति-२०१३)
- ५. अस्मिता का सेतुबंध : रामायण परक निबंध संग्रह(प्र.-रन्नादे प्रकाशन,प्रथम आवृति-२०१५)
- ६. कृष्ण के पथ पर : श्री कृष्ण जीवनदर्शन(प्र.-रन्नादे प्रकाशन,प्रथम आवृति-२०१३)
- ७. अहर्निश आनंदयात्रा :जीवनव्यवहार में वेदांत(प्र.-रन्नादे प्रकाशन, प्रथम आवृति-२०१७)
- Management गीता :गीता के तत्त्वज्ञान के प्रकाश में आधुनिक व्यवस्थापन(प्र.-आर.आर.शेठ, प्रथम आवृति-२०१९)
- ९. जीवनगीता : स्वस्थ और समग्र जीवनदर्शन(प्र.-आर.आर.शेठ, प्रथम आवृति-२०१९)
- **१०. अध्यात्म गीता :**चेतना के ऊर्ध्वीकरण की अंतरयात्रा(प्र.-आर.आर.शेठ, प्रथम आवृति-२०१९)
- ११. विश्वगीता :गीता का विश्वमानव दर्शन(प्र.-आर.आर.शेठ, प्रथम आवृति-२०१९)
- **१२. राष्ट्रगीता**: राष्ट्रनिर्माण और राष्ट्रीय चारित्र्य निर्माण में गीतादर्शन(प्र.-आर.आर.शेठ, प्रथम आवृति-२०१९)
- **१३. मानवगीता**: स्वस्थ, सुखी और सार्थक जीवनकी जडीबुद्दी(प्र.-आर.आर.शेठ, प्रथम आवृति-२०२१)
- १४. संभवामि । can,युवा उत्प्रेरक निबंध संग्रह(प्र.-रन्नादे प्रकाशन, प्रथम आवृति-२०२१)

" मोहन से मोहन " सागर की लहेरे

अंक	विषय	पृष्ठ
8	पोरबंदर की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत	C
2	रुक्मिणी-माधवविवाह	९
3	जाम्बुवती-श्री कृष्ण विवाह	83
8	श्री कृष्ण-सुदामा की पावन सख्य कथा	१६
બ	वीर विक्रमादित्य और भगवती मां हरसिद्धि का प्रसंग	२०
ξ	हनुमानसुत मकरध्वज का प्रसंग	23
b	घूमली के प्रतापी जेठवा राजवंश का विहंगावलोकन	२६
6	राजमाता कलाबाइ का शौर्यवान एवं पावन चरित्र	२८
९	संस्कार मूर्ति राणा सरतानजी का प्रेरक चरित्र	30
१०	संतकवयित्री लीरबाई माँ	32
११	राजमाता रुपाळीबा और राणा विकमातजीः सुशासन और जनकल्याण के महान आदर्श	34
१२	स्वामी विवेकानंद की पोरबंदर यात्रा	3८
१ ३	जेठवा वंश के अंतिम शीलवान राणा नटवरसिंहजी द्वारा कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर का स्वागतोत्सव	४१
१४	स्वातंत्र्य संग्राम में पोरबंदर का योगदान: छगन खेराज वर्मा	88
१५	नेताजी सुभाषचन्द्र बोझ के साथी लक्ष्मीदास दाणी	४६
१६	महात्मा गांधीजी के समक्ष शेठ नानजी कालीदास द्वारा कीर्तिमंदिर निर्माण का प्रस्ताव	४९

७ निवेदन रू

गांधीभूमिमें १९९४ में प्रसाशनिक सेवा का उद्गम होना और पुन: यहीं कलेक्टर के स्वरूपमें सेवा का अवसर मिलना एक अद्भूत संयोग है! प्रसाशनिक सेवा हमें अपने क्षेत्र के भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अभ्यास का मौका देती है। मेरा सद्भाग्य रहा कि मुझे सौराष्ट्र के सागर किनारे बसे सोमनाथ तीर्थ में सेवा करने का भी अवसर मिला। वहीं गुणीजनों से विद्या-व्यासंग हुआ। इसी दौरान यह अनुभव हुआ कि हमारी अनमोल सांस्कृतिक धरोहर को संभालने के लिए नयी पीढी के साथ सुचारु ढंग से संवाद करना होगा। बस, यहीं से मां सरस्वती की साधना प्रारंभ हुई। जैसे कि स्वामी विवेकानंदजी मानते थे, आध्यात्मिकता भारतवर्ष की महामूडी है। इसके बलबूते पर नवभारत का निर्माण संभव है। आधुनिक भौतिक्शास्त्री डॉ. आइन्स्टाइन कहते है, विज्ञान यदि हमें 'क्या है?' प्रश्न का उत्तर देता है तो 'क्या होना चाहीए?' का जवाब आध्यात्मिकता दे शकती है। आध्यात्मिक पश्चादभू और टेकनोलोजी की शिक्षा ने मुझे इन दोनों महान विचारकों को समजने की दृष्टि दी है, यह मेरा सौभाग्य है।

प्रभास-सोमनाथ की भांति पोरबंदर का इतिहास बहुत रोचक और समृद्ध है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय दृष्टि से ईतिहास का अनुसंधान मेरी खोज का विषय रहा है। तीन दशक उपरांत से इस पथ पर कुछ छोटा-बड़ा सर्जन होता रहा है। हर सर्जन के साथ मेरे अंतरमन का संस्करण भी होता रहा है! 'मोहन से मोहन' के सर्जन के दरम्यान कुछ ऐसा ही हुआ है। जैसे कि मुझे लगता है कि इस भूमि की और गहरी पहेचान हुइ है! बस, यही मेरी उपलब्धि है।

यह मेरी अनुभूति है। इसे मैंने रसमय ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। युवाओं में अपनी परंपराओं एवं जीवनमूल्यों के प्रति आस्था दृढ बने, यही इस रचना का उद्देश है। पोरबंदर का इतिहास बहुत विशद और समृद्ध है। इसे कुछ पन्नों में समेटना संभव नहीं। ईतिहास की कोइ घटना अथवा पात्र इस यात्रामें अज्ञान अथवा विस्तारभय के कारण छूट गया हो, ऐसा संभव है। जिस के लिये विद्वज्जन मेरा मार्गदर्शन करें, ऐसी अभ्यर्थना है। इस यात्रा में मेरे मार्गदर्शक और सौराष्ट्र और विशेषत: पोरबंदर के इतिहास के परम साधक प्रा. नरोत्तम पलाण जी का पूरा सहयोग मिला। उन्होंने कइ बहूंमूल्य जानकारीयां उपलब्ध कराइ। मेरे ग्रंथ को देखा और प्रस्तावना भी लिखकर दी। इसलिये मैं उनका ऋणी हूं! इस सर्जन में प्रमुखत: प्रा. पलाणजी के "पोरबंदरनो इतिहास" और श्री हरदेवसिंह जेठवा कृत "श्री हनुमानवंशी जेठवा राजपुतोनी शौर्यगाथा" के संदर्भों को सामिल कीया गया है।

यह भी एक सुंदर योगानुयोग है कि गांधी जन्मतीथि के शुभ दिन कीर्तिमंदिर में इस पर्यावरण नाट्यकृति का लोकार्पण गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाइ पटेल के करकमलों से हो रहा है। मैं मान्यवर मुख्यमंत्रीश्री के इस अनुग्रह के लिये ऋणी हूं!

> अशोक शर्मा भा.प्र.से.

॥ धीमताम् दुर्लभतरम् ॥

श्री अशोकभाइ शर्मा, वैसे तो बहुत क्षमतावान कलेक्टर है, परंतु उनकी विशेषता जितनी वहीवटी कौशल्य में है उतनी ही प्राचीन भारतीय साहित्य, गीता-उपनिषद तथा इतिहास में भी है। आप अंतर से हीन्दु संस्कृति के चाहक एवं पूजक है। उन्होंने श्रीमद् भागवत और श्रीमद् भगवथ् गीता पर एकाधिक सर्जन दिये है। सोमनाथ जैसी राष्ट्रकी एक महान घटना विषयक उनका नाट्यसंवाद गुजरात में सविशेष लोकप्रिय बना है। आज अशोकभाइ हमें राष्ट्रपिता को केन्द्र में रखकर "मोहन से मोहन " की जो रोचक सांस्कृतिक यात्रा करा रहे है वह, नि:शंक आनेवाली पीढी के लिये एक तेज किरण बनेगा।

यमुना के तट पर प्रकट होकर सागर किनारे विराम लेने वाले पांच हजार वर्ष पूर्व के मोहन के साथ पोरबंदर के सागर किनारे जन्म ले कर यमुना के तट पर अंतिम संस्कार प्राप्त करनार महात्मा मोहन तक की एक विविधरंगी इतिहास की झलक अशोकभाइ की लाघवपूर्ण कलम से यहां आलेखित हूई है। पौराणिक और एतिहासिक दोनों काल की अतूट कड़ी समान परदु:खभंजक वीर राजा विक्रमादित्य और निशाकाल में समंदर किनारे ठहरने वाली हरसिद्धि माता का अद्भुत कथानक यहां बड़े ही कलात्मक ढंग से सम्पन्न हुआ है।

घूमली, राणपर, छांया और पोरबंदर के जेठवावंश के उदार चारित्र्यवान राजवीओं के विविध घटनाक्रम से ले कर स्वामी विवेकानंद और किववर रवीन्द्रनाथ की जो सुवास यहां प्रकट हो रही है, वह अशोकभाइ की सर्जकता के उत्तम उदाहरण है। अंत में देश के महान क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा के साथी और गदर पाटी के मुख्पत्र के गुजराती संपादक छगन खेराज वर्मा और नेताजी सुभाष के साथ लक्ष्मीदासभाई दाणी की झलक के साथ गांधीजन्मस्थान – कीर्ति मँदिर के निर्माण की पश्चादभू समान पोरबंदर के राजरत्न नानजी शेठ का मिलन हमें सांप्रत में विहार कराता है। सौराष्ट्र के पश्चिम किनारे की पांच हजार वर्ष पुरानी संस्कृति यहां उजागर हो रही है।

गुजरात के किसी एक जिल्ले के इतिहास को प्रदर्शित करती ऐसी कोइ और रचना अभी तक उपलब्ध नहीं है। अशोकभाइ की यह कृति इस दृष्टि से अनन्य है और इसका विशेष महत्व इसिलये है कि वह गांधीभूमि को लक्षित करती है। बीच-बीच में साखी, दुहा, उपनिषद के मंत्र अशोकभाइ की बहुश्रुतता का परिचय कराते है। तो यह समग्र संकलन उनकी दृष्टि और देशप्रेम की चिरंजीवी झलक है। श्री अशोकभाइ शर्मा हमारे विद्यावंत दुर्लभजन है। में सह्रदय उनका स्वागत करता हूं।

नरोत्तम पलाण, पोरबंदर

पोरबंदर चोपाटी









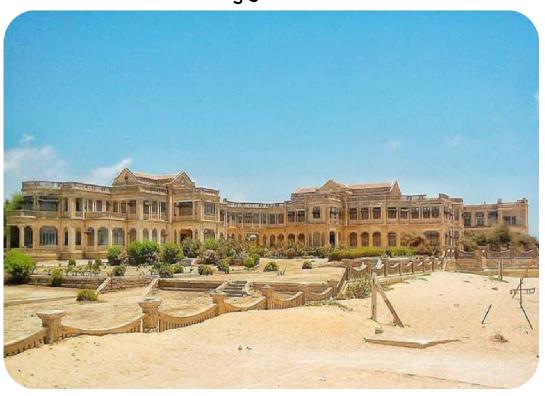




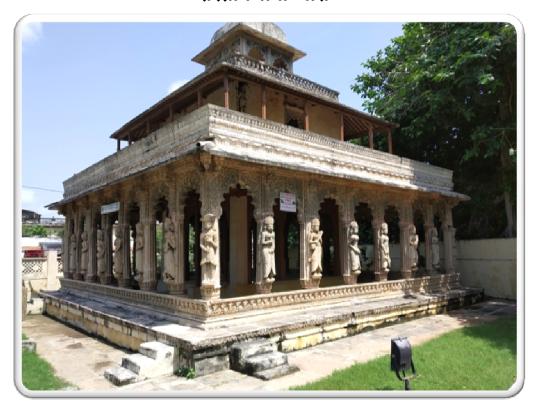




हुजुर पेलेस



सरतानजीनो चोरो



जन्माष्टमी लोकमेला





मोहन से मोहन पोरबंदर की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत



स्नधारः (पार्श्वभूमि में सागर की लहरों की गहन आवाज गुंजती है.) मैं रत्नाकर सागरं! आप का हार्दिक स्वागत करता हूं! मैं आज आपको भारत के इतिहास की सैर कराना चाहता हूं! यह सब वह बाते हैं, जो मैंने अपनी लहरों की आंखों से सुनी है! मैंने अपने ही कानों से सुनी है! वैसे भारत के दो नाम सारे विश्वमें जाने जाते है। मदनमोहन श्रीकृष्ण एवं मोहनदास गांधी। यह योगानुयोग नहीं कि इन दोनों का संबंध पोरबंदर से है। योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण का जन्म भले ही मथुरा में हुआ और लीलाधाम व्रज रहा हो किन्तु उनको द्वारकाधीश का सम्मान और योगेश्वर की उपाधि सौराष्ट्र की पावन धरा से मीली है। ऐसे ही हमारे युग के दूसरे ज्योतिर्धर महात्मा गांधी का जन्म पोरबंदर में हुआ। वैसे तो ऐसी विश्ववंद्य विभूति के नाम को कोइ एक नगर अथवा प्रांतसे सिमित रखना योग्य नहीं है, अपितु इनसे प्रेरणा लेने का स्वाभाविक विशेषाधिकार इस भूमि के संतानों को है।क्या आप जानते है? पोरबंदर की स्थापना कब हुइ? घूमली के महाराजा बाष्कलदेव के तामपत्र (वि.सं. १०४५) के अनुसार मेरे किनारे एक जहाजी व्यापार के हेतु छोटी सी बस्ती बसाइ गइ और श्रावणी पूर्णिमा के दिन राज्य का प्रथम जहाज मेरी तरंगो पर तैराया गया! इसलिये आज भी यहां के साहसी सागरपुत्र श्रावणी पूर्णिमा रक्षाबंधन के पर्व पर मेरी पूजा करते है और अपनी सागरयात्रा प्रारंभ करते है।



रुक्मिणी-माधव विवाह





सूत्रधार: क्या आप जानते है, भगवान श्रीकृष्ण की अष्ट पटराणीओं से दो का संबंध पोरबंदर से है? जी हां! भगवान की सबसे प्रमुख पटराणीजी रुक्मिणी जी के साथ विवाह माधवपुर के सुंदर उपवन में हुआ। इसी प्रकार भगवान राम के साथी जाम्बुवान की कन्या जाम्बुवती जी के साथ भी श्रीकृष्ण का विवाह हुआ था। पोरबंदर के पास राणावाव नगर से कुछ मील की दूरी पर जाम्बुवान की गुफा आज भी विद्यमान है! आइए पहले श्रीमद्भागवत महापुराण के दसम स्कंध के बावन और त्रेपनवें अध्यायमें वर्णित रुक्मिणी-माधव के उस मंगल परिणय की मध्र एवं पावन स्मृति को ताजा करें।

(पश्चादभूमें शहनाइ और मंगल ध्विन का नाद हो रहा है। द्वारिका का राजमहल का दृश्य। भगवान श्रीकृष्ण शय्या पर विराजमान है। उसी समय द्वारपाल प्रवेश की अन्मित लेता है।)

द्वारपाल: प्रणाम द्वारकाधीश!

श्रीकृष्ण: आयुष्यमान भव! क्या बात है?

द्वारपाल: भगवन्! विदर्भ राज्य के भूदेव आप से मिलने की अन्मति चाहते है!

श्रीकृष्ण: (भगवान कुछ सोचते है। फिर उन के मुखमंडल पर स्मित प्रकट होता है, और सहसा द्वारपाल से आज्ञा करते है।) अवश्य वह महाराजा भीष्मक की कोइ महत्त्व की सुचना लेकर आया होगा। आप उसे त्रंत ही भेजीये। (भूदेव प्रवेश करते है)

श्रीकृष्ण: ब्रह्मदेवता! आप को सादर वंदन! (श्रीकृष्ण भूदेव को वंदन करते है) आपका स्वागत है!

विदर्भ के भूदेव : द्वारकाधीश आपका कल्याण हो ! में विदर्भ की राजकन्या रुक्मिणीजी का दूत हूं!

श्रीकृष्ण: (प्रसन्न मुख से) देवी रुक्मिणी का हमारे लिये क्या संदेश है?

भूदेव: (नलाकार कमरपट से भुर्जपत्र निकालते हुए) भगवन्! देवीने आप की सेवा में यह संदेश भेजा है।

श्रीकृष्णः (पत्र को दाहीने हाथ से लेकर खोलकर देखते है, और उनके मुखमंडल पर रोमांचकारी स्मित प्रकट होता है) भूदेव आप धन्य है! आपने प्रवास का कष्ट लेकर यह संदेश पहूंचाया है। (भगवान ताली बजाकर द्वारपाल को बुलाते हैं) यह अमारे परम प्रिय अतिथि है। इनको राजमहेल के अतिथिगृहमें ठहराया जाय। (द्वारपाल वंदन कर के अतिथी के साथ चलता है, तभी भगवान कहते हैं) आज आप स्नान-भोजन और विश्राम करें और इस पत्र का उत्तर लेकर आप कल ही प्रस्थान करें। देवी रुक्मिणी उसका प्रतिक्षा कर रही होगी!

ब्राहमण : जो आज्ञा द्वारकाधीश ! (और वह विदाय लेता है, और श्रीकृष्ण पत्र को देखते हुए ध्यानस्थ होते है, उसी समय कोइ स्त्रीका ध्विन पश्चाद्भ से गूंजता है!)

..... (स्त्री की मधुर ध्वनि नेपथ्य से)

है प्रेम स्वरूप त्रिभुवन सुंदर प्रभो ! आप कुल शील स्वभाव सौंदर्य विद्या अवस्था धन धाम से है श्रेष्ठ! ऐसी कौन सुंदरी होगी जो आपका वरण करना न चाहेगी?मैं विदर्भ कन्या रुक्मिणी आपको मनसे पित मान चूकी हूं! हे अंतर्यामी भगवन्! मेरे अंतर की बात आप से कैसे छिप सकती है? हे नारायण!! मैं बड़ी लिज्जित हूं कि आज स्वयं ही अपने मन की बात आप से कह रही हूं! लेकिन मैं क्या करुं?मेरा बंधु रुक्मि अपने मित्र चेदि नरेश पुत्र शिशुपाळ से मेरा विवाह करना चाहता है! किन्तु मैं तो मनसा वाचा कर्मणा आप की आराधना करती हूं! आप मेरे हृदय के स्वामी है! आप पधारें, मेरा वरण करें! यदि आप नहीं आये तो मैं इस नश्वर देह को त्याग दूंगी! और जन्मोजन्म आप के वरण की प्रतिक्षा करती रहूंगी! मैं आप की हूं, आप की रहूंगी जगन्नाथ! (श्रीकृष्ण गहन सोच में डूब जाते है। उसी समय बलराम दाऊ प्रवेश करते है।)

बलरामजीः वासुदेव! (श्रीकृष्ण बलराम दाउ की तरफ मुंफ करते है, लेकिन सोच में डूबे है) क्या बात है? आज हमारे प्रिय लघुबंधु किस चिंतन में डूबे है? कोइ विशेष बात है?

श्रीकृष्णः बलराम दाऊ! मेरी कोइ बात आपसे कैसे छीपी रह सकती है? अभी थोडी देर पहले मुझे विदर्भ की राजकुमारी देवी रुक्मिणी का पत्र मिला। विदर्भ राजकुमार रुक्मि अपनी बहन का विवाह शिश्पाल से करना चाहत है।

बलरामजीः शिशुपाल? चेदीनरेश? वह तो बड़ा ही उद्दंड और असभ्य है! ऐसे व्यक्ति से साक्षात् महालक्ष्मी के अवतार जैसी देवी रुक्मिणी का विवाह तो सर्वथा अनुचित है!

श्रीकृष्णः और वह भी देवी की इच्छा से विरुद्ध! देवी रुक्मिणी मन से मेरा वरण कर चूकी है। मै क्या करूं? बलरामजी: उसमें सोचने की कोइ बात ही नहीं, माधव! तुम को उसके मनोरथ का आदर करना ही होगा! वैसे भी चेदीनरेश शिशुपाल तो हमारे शत्रु जरासंध का मित्र है। युं मान लो जैसे भारतवर्ष के सात्त्विक जीवों को कुचलने वाले असुर रथ के दो पहीयें! उन के हाथ से रुक्मिणी को बचाकर और यदुकुल की पटराणी बनाने का महाकार्य आप के अतिरिक्त और कौन कर सकता है?

श्रीकृष्ण: आप ठीक कहते है, दाउ। रुक्मिणी का वरण यदुकुल के लिए उपकारक तो है ही किन्तु में इसमें एक और महत्त्वका पहलू देखता हूं।आर्यसंस्कृति के अनुसार मनपसंद और सुयोग्य जीवनसाथी चुनना हर कन्या का अधिकार है।

बलरामजी: और इन सिद्धांतो की रक्षा और पुष्टि ही तुम्हारा युगकार्य है! (भगवान के समक्ष आकर वंदन करते है और विदाय लेते है)

(श्रीकृष्ण के मुख पर दैवी प्रसन्नता छा जाती है! वह खिडकी से झांखते है! स्टेज के उस भाग में अंधेरा छा जाता है और दूसरे कोने में प्रकाश होता है, यह देवी रुक्मिणी का कक्ष है! देवी रुक्मिणी के हाथ में श्रीकृष्ण का पत्र है जो उसे अपने नेत्र से लगाती है! नेपथ्य से श्रीकृष्ण की आवाज गूंजती है! "मैं आ रहा हूं देवी रुक्मिणी, आप आश्वस्त हों! मैं शीघ्र ही आ रहा हूं!" देवी रुक्मिणी की आंखों से प्रेम के आंस् निकल रहे है!)

सूत्रधार: भगवान नारायण अपनी प्रियतमा महालक्ष्मी का अभिसार कैसे टाल सकते है? और द्वारकाधीश चतुरंगी सेना के साथ विदर्भ पधारे! वहां उन्होंने शिशुपाळ, मगधराज जरासंध और उनके साथीओं को परास्त किया और रुक्मिणी को अपने साथ लेकर द्वारका की और चल दिये! आइए अब वह पावन परिणय का दर्शन करें!

दृश्य 2

(माधवपुर का उपवन, जहां सुंदर लग्नमंडप सजाया गया है। पुष्प वल्लीसे वातावरण मुखरित है। यदुवंशी स्त्रीयां मंगल गान कर रही है। मंडप के मध्य में सिंहासन पर श्रीकृष्ण विराजमान है। उसी समय देवी रुक्मिणी का आगमन होता है। ऋषि मुनि और सजी धजी माताएं और कन्याएं उन को घेरे हुए है। ब्राहमण देवता मंत्रगान से स्वागत करते है। सबका ध्यान आकर्षित करते हुए 'सावधान सावधान' और जयनाद गूंज रहे है। लज्जामंडित देवी रुक्मिणी धीरे धीरे चलते हुए मंडप में आती है। ब्रहमदेव की आजा से वह वरमाळ श्रीकृष्ण को पहनाती है। श्रीकृष्ण भी देवी को वरमाळा पहनाते है। दशों दिशाओं से जयनाद गूंजता है! "देवी ऋक्मिणी की जय हो! भगवान द्वारकाधीश की जय हो!' आकाश से देवता पुष्पवृष्टि करते है। भूदेव श्रीकृष्ण और रुक्मिणी को पणिग्रहण कराते है! फिर मंडप के मध्यमें यज्ञकुंड के आसपास वरवध् प्रदक्षिणा करते है। भूदेव स्वस्तिवाचन करते है! और इस तरह विवाह संपन्न होता है)

सूत्रधार: मैं हूं रत्नाकर सागर! द्वारकाधीश प्रभु की अनेक लीलाओं का साक्षी! मेरे ही तट पर मधुवन में भगवान ने अपनी प्रियतमा का पाणिग्रहण किया था! श्रीकृष्ण की हर लीला मधुर और रहस्यमय है! विदर्भ की कन्या का वरण करके उन्होंने दो प्रदेशों को सामाजिक अनुबंध से जोडा। इतना ही नहीं, एक चारित्र्यवान कन्या के मनोरथ को परिपूर्ण किया। उसे शिशुपाळ जैसे क्रूर राजा से जबरन विवाह से बचाया। कन्या उसीसे ब्याही जाय जहां उसका श्रेय हो और जिसे वह प्रेम करती हो! ऐसे आर्यसत्य को अपने इस दिव्य परिणय से चरितार्थ किया! आज भी माधवपुर के उपवन में माधव-रुक्मिणी के विवाह की शहनाइ गूंज रही है! आइए वहां बैठकर ध्यान करें और उस पावन क्षण का साक्षात्कार करें! जय माधव, जय रुक्मिणी!



जाम्बुवती-श्रीकृष्ण विवाह



सूत्रधार: पोरबंदर की पावन भूमिसे भगवान श्रीकृष्ण को एक और पटरानीजी मीली थी। क्या जानते है उस परम सौभाग्यशाली देवीका नाम? जी हां! उनका नाम था जाम्बुवती! भगवान राम के साथी और हनुमानजी को अपने सामर्थ्य की प्रतीति करानेवाले महाप्रतापी रुक्षराज जाम्बुवान की पुत्री! एक बार द्वारकाके यादव सत्राजित का प्रतिदिन सौ भार सोने देनेवाला स्यमंतक मणि खो गया। उसने भगवान श्रीकृष्ण पर चोरी का लांछन लगाया। भला द्वारकाधीश को किस बात की कमी थी! फिर भी द्वेषवश सत्राजित ने ऐसा किया। भगवान उस सूर्य मणि को ढूंढने मिकले। मणि की खोज में द्वारकेश बरडा पर्वत आ पहूंचे। और वहां एक गुफामें प्रवेश करते है! बस यहीं से हम श्रीमद्भागवत महापुराण के दसम स्कंध के छप्पनवें अध्यायमें वर्णित उस रोमांचक घटना का अन्संधान करते है।

(गुफा का दृश्य। भगवान गुफामें प्रवेश करते है। गुफा के भीतर एक कन्या खेल रही है। श्रीकृष्ण ने नजदीक जाकर देखा तो वह कन्या उसी महामुल्यवान मणि से खेल रही है। तभी कोइ नवांगतुक को देखकर कन्या चोंक जाती है और चिल्ला उठती है। उसकी आहट सुनकर गुफामें उसके पिता जाम्ब्वान आ जाते है)

जाम्बुवान: अरे! तुं कौन है? और ऐसे चोरीछूपीसे मेरी गुफामें आकर मेरी बिटीया को डरा रहा है?

श्रीकृष्णः मे वासुदेव कृष्ण हूं। द्वारका के यादव सत्राजित का स्यमंतक मणि ढूंढते ढूंढते मैं यहां आ पहूंचा हूं। और यह क्या? वह मणि तो इस कन्या के पास है! वह यहां कैसे आ गया? जाम्बुवान: वह मैं नहीं जानता हूं। लेकिन तुने मेरी अनुमतिके बिना इस गुफा में प्रवेश किया है। इसलिये मैं तुझे दंड दूंगा।

(ऐसा कहकर वह श्रीकृष्ण पर धावा बोल देता है। भगवान श्रीकृष्ण भी उस बलवान ऋक्षराज से द्वंद्वयुद्ध करते है। दोनों के बीच बडा ही रोमांचक युद्ध होता है। अंत में वयस्क जाम्बुवान थक जाता है)

जाम्बुवान: वैसे तो मुझे कोइ मानव-दानव वा देवता नहीं हरा सकता है। लेकिन आज आप के बाह्बल के सामने मैं विवश हूं। (ऐसा कहकर हाथ जोडते हुए) आप कौन है?

(भगवान उत्तर देने के बजाय जाम्बुवान के सामने मुस्कुराते रहते है। जाम्बुवान नजदीक आकर बडे ही ध्यान से देखते है। उनकी आंखोमें तेजी आ जाती है)

जाम्बुवान: क्या द्वापर आ गया? कहीं मेरे प्रभु राम का पुनरावतार तो नहीं हो गया है?

श्रीकृष्ण: (बडे ही रहस्यमय स्मित के साथ) ठीक पहचाना रुक्षराज। मैं ही हूं तुम्हारा त्रेतायुग का मित्र!

जाम्बुवान: अरे राम! मैंने यह क्या किया? आज युगों युगों के बाद जब मेरे स्वामीके दर्शन हुए तो मैंने उनसे युद्ध किया? मेरा अपराध क्षमा करें, भगवन्! (ऐसा कहकर वह श्रीकृष्ण के चरणों में गिर पडते है। भगवान उनको उठाते है और गले लगाते है)

श्रीकृष्णः नहीं रुक्षराज जाम्बुवान! आपने कोइ अपराध नहीं किया है। जब लंकायुद्ध समाप्त हुआ तो मैंने सभी साथीओं को मनचाहा उपहार दीया। याद कीजिये, तब आपने क्या मांगा था?

जाम्बुवान: (पुरानी यादें झंझोलते हुए, फिर कुछ याद आते ही हंस पडे) भगवन्! मुझे स्मरण हुआ। मैंने कहा था कि इस युद्ध में मेरी बारी आइ ही नहीं! मैंने अपनी युयुत्सा को तुष्टि मिले ऐसा वर मांगा था!

श्रीकृष्ण: तो फिर रूक्षराज! आप के सामने लड सके ऐसा विश्व में और कौन हो सकता है? (हंसते हुए) इसलिये यह काम स्वयं मैंने ही कर लिया! आशा रखता हूं कि आज आप की मनोकामना पूरी हुइ!

जाम्बुवान: (अपनी बाजुओंमे हो रही पीडा याद करते हुए, उसे सहलाते हुए) भगवन्! न मात्र मेरी युयुत्सा तृप्त हुइ है, आप के कोमल दिखते करकमलों के कठोर किन्तु दिव्य स्पर्श से मेरा तनमन पावन हो गया है! (ऐसा कहकर जाम्बुवान हंसते है, और श्रीकृष्ण भी उनको गले लगाते हुए, उनके बाजुओंको सहलाते हुए मधुर स्मित करते है।)

श्रीकृष्ण: अरे! आप को ज्यादा चोट तो नहीं लगी? (ऐसा कहकर जाम्बुवान के कंधे एवं पीठ को सहलाते है फिर उनके दोनों हाथ अपने हाथमें लेकर), ऋक्षराज, प्रिय मित्र! बताइए, अब आपकी और क्या मनोकामना है?

जाम्बुवान: (हाथ जोडकर) भगवन्! पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन से मेरा जीवन धन्य हो गया! अब इस स्यमंतक मणि के साथ मैं अपनी कन्या जाम्बुवती का हाथ आप के करकमलों में सोंपना चाहता हूं! आप इस सेवक का प्रस्ताव स्विकार करें और मुझे आप के नित्य लीलाधाम जाने की आज्ञा करें!

श्रीकृष्ण: जाम्बुवान जी! यह तो मेरा भी सौभाग्य है कि जाम्बुवती जैसी सुशील और दिव्य कन्या का वरण करुं! आप निश्चिंत होकर महाप्रस्थान करें! आप का कल्याण हो!

(जाम्बुवान अपनी कन्या का हाथ भगवान के हाथमें देते है।गुफामें स्थित शिवलिंग पर चढायी हुइ पुष्पमाला शिवजी की आज्ञा लेकर जाम्बुवान दोनों को देते है। उसी समय नेपथ्य से शहनाइ और दुंदुभी घोष होता है। पहले जाम्बुवतीजी श्रीकृष्ण को वरमाला पहनाती है और बादमें श्रीकृष्ण। दोनों नवविवाहीत वरकन्या शिवलिंगको प्रणाम करहे उनकी प्रदक्षिणा करते है। चारों और संदर मंगल ध्विन बजने लगते है।

सूत्रधारः और इस तरह द्वारकाधीश को अपनी दूसरी पटराणीजी मीली। श्रीकृष्ण की दिव्य अवतारलीला अनन्य है। सत्राजित के मणि की चोरी के आरोप को भगवान ने एक अनुपम अवसर में परिवर्तित किया। रामावतार के अपने साथी की मनोकामना पूर्ण की, उनका उद्धार किया और एक दिव्य कन्या का वरण भी कर लिया। रामावतार में भगवान को साथ देनेवाले वानर, रुक्ष अथवा वनवासी भी महान चरित्रवाले विकसित समाज थे। भगवान ने उनका साथ लेकर एक शक्तिमान राजा रावण को परास्त किया था। रुक्ष प्रजाति की कन्या का वरण करके श्रीकृष्ण ने सामाजिक समरसताका संदेश दिया है! आइए, योगेश्वर श्रीकृष्ण के द्वारा प्रशस्त इस एकात्मता के राजमार्ग पर चलें और महान सभ्यता का निर्माण करें। जय श्रीकृष्ण!

श्रीकृष्ण-सुदामा की पावन सख्यकथा



सूत्रधारः "रसो वै सः" श्रीकृष्ण चरित्र रसमय
है। भगवान की बाललीला तो वात्सल्य रस से भरपूर है।
बचपन और किशोरावस्थामें श्रीकृष्णने अनेक मित्र
बनायें। इतना ही नहीं उन्हें जीवनभर याद रक्खा।
आधुनिक भाषामें कहते है, अ फ्रेन्ड इन नीड इझ अ
फ्रेन्ड इन्डीड! सुदामा और श्रीकृष्ण के सख्य की
पृष्ठभूमि बनने का सौभाग्य इस भूमि को मिला है।
आज भी पोरबंदर को सुदामापुरी के नाम से जाना जाता
है। भगवान वेद व्यासजीने श्रीमद्भागवत के दसम स्कंध
के दो अध्यायों में इस पावन प्रसंग को अंकित किया है।
आइए इस मैत्रीरस का आकंठ पान करें)

(एक झोंपडी का दृश्य। भूदेव सुदामाजी और उनकी पितन बैठे है। उसी समय उनका छोटा बालक रोते रोते आता है। बच्चे को गोदमें लेकर मां उसे सांत्वना देती है। और फिर उसे रोने का कारण पूछती है)

सुशीला: अच्छे बच्चे ऐसे रोते नहीं? भूख लगी है? चलो मैं तुम्हें दूध पिलाती हूं। (ऐसा कहकर वह छोटे से पात्र में रख्खा ह्आ दूध देती है)

बालक: मां यह दूध नहीं है! मैंने एकबार अपने ग्वाला मित्र के घर दूध पीया था। वह तो बडा स्वादिष्ट था। यह मुझे पसंद नहीं! मैं नहीं पीउंगा! (इतना कहकर वह प्याला रख देता है और रुठकर दूर चला जाता है)

सुशीला: (पित की और मुडकर विवशतासे) घर में दूध नहीं। इसलिये मैं आटे में पानी मिलाकर इसे देती हं। और वह अब असली दूध का स्वाद जान चूका है! मैं क्या करुं?

सुदामा: भगवती! तुम जैसी सुशील और सुंदर स्त्री के भाग्य में मेरे जैसा दिरद्र पित मिला है! मैं भी क्या करुं? आज कल कोइ मेरे पास पढ़ने आता नहीं। विद्या के अतिरिक्त और कोइ व्यवसाय मैं जानता भी नहीं! मैं क्या करुं? (ऐसा कहकर वह अपने सिर को पकड़कर बैठ जाते है)

सुशीलाः आप निराश न हों! आप बडे ही विद्वान और पवित्र है। आप का साहचर्य मिलना यही इश्वर की बडी कृपा है!

सुदामाः परंतु मेरे से तुम लोगों का दुःख देखा नहीं जाता! मैं अपना कर्तव्य निभाने में असफल हूं! सुशीला: आप कहतें थे कि द्वारकाधीश श्रीकृष्ण आप के बाचपन के सखा है। आप जाकर उनसे मिलेंगे तो अवश्य ही वह आपकी सहायता करेंगे।

सुदामा: किन्तु मैंने जीवनभर अयाचक व्रत लिया है। मैं किसीसे कुछ मांग तो नहीं सकता! सुशीला: आप एकबार उनसे मिल तो लिजिए। श्रीकृष्ण बडे ही दयालु है। आप की अवस्था देखकर स्वयं ही समज जायेंगे और कोइ सहायता कर देंगे।

सुदामा: ठीक है। तो मैं द्वारकापुरी जाता हूं। बहुत वरसों से अपने सखा से मिला नहीं। और कुछ नहीं तो श्रीकृष्ण के दर्शन तो हो ही जायेंगे! (ऐसा कहकर वह उठते है, फिर अचानक कुछ याद आते ही रुकते है। और सुशीलासे कहते है) मैं द्वारकाधीश के पास खाली हाथ कैसे जा सकता हूं? उन के लिये कोइ भैंट।।।(फिर अपनी खाली कुटिया को देखकर निराश होकर) लेकिन मैं क्या ले जाउं?

सुशीला: आप चिंता न करें। मैं अपनी सखीसे कुछ उधार ले आती हूं। (ऐसा कहकर वह नेपथ्य में जाती है, सुदामा आशाभर नेत्र से देखते रहते है, तभी एक मुठ्ठी में थोड़े से तंदुल लेकर सुशीला आती है और वस्त्र की गुठरी बनाकर सुदामा को थमाती है, सुदामा गुठरी को देखकर हंसते है और आकाश की और देखकर चल देते है)

दूसरा दृश्य:

(द्वारकाधीश के महल का कक्षा। भगवान श्रीकृष्ण शय्या पे पोढे है। रुक्मिणीजी पंखे से सेवा कर रही है। तभी द्वारपाल की आवाज आती है।)

द्वारपाल: द्वारकाधीश की जय हो।

श्रीकृष्ण: (शय्या पर लेटे हुए, द्वार की और देखते हुए) आयुष्यमान भव! क्या बात है?

द्वारपाल: (कक्ष के द्वार पर खडे होकर) भगवन्! कोइ निर्धन ब्राहमण आये है। आपसे मिलना है।और कहते है कि वह आप के बचपन के मित्र है। उनका नाम सुदामा (उतना ही सुनकर श्रीकृष्ण खडे हो जाते है। और नंगे पैर दौडते हुए) श्रीकृष्ण: सुदामा! कहां है मेरा सखा सुदामा? (ऐसा कहकर भगवान कक्ष की बहार दौड जाते है, रुक्मिणीजी आश्चर्य से देखती रहती है, नेपथ्य से बंसी की मधुर ध्विन गूंज उठती है, कुछ क्षण बाद भगवान सुदामाजी का हाथ थामकर कक्ष में लाते है)



श्रीकृष्ण: देवी रुक्मिणी! देखो कौन आया है? मेरा मित्र! मेरा प्राणप्रिय सखा सुदामा! (रुक्मिणीजी आगे आकर हाथ जोडकर स्वागत करती है, सुदामाजी दार्यां हाथ उठाकर आशिष देते है, श्रीकृष्ण रुक्मिणी के सामने देखकर कहते है) मेरा मित्र लंबी पैदल यात्रा कर के आया है। पाद्य अर्घ्य से उसकी थकान नहीं उतारोगी?



रुक्मिणी: जी अवश्य! आप बिराजीए विप्रवर! (सुदामाजी को सिंहासन पर बिठाया जाता है, रुक्मिणीजी सेविका को आज्ञा करती है जो जलपात्र और पैर धोने का बडा पात्र लेकर आती है। रुक्मिणी जल की धारा करती है और श्रीकृष्ण नीचे बैठकर सुदामाके पैर पखारते है। बाद में अपने अंगवस्त्रसे सुदामाजी के पैर पांछते है। सेविका जलपात्र लेकर विदा होती है और पीने का जल और फल लेकर आती है।

श्रीकृष्ण सुदामाजी को आग्रह करके फल खिलाते है और रुक्मिणी चामर ढोती है)

श्रीकृष्ण: सखा! आप का द्वारकापुरी में स्वागत है। परंतु आप अकेले क्युं आये? मेरी भाभी सुशीलाजी को क्युं साथ न लाये? और भाभीजी बहुत प्यारी है। उन्होंने मेरे लिये कुछ तो भेजा होगा! (सुदामाजी अपने कमरपट पर बांधी गुठरी को उपवस्त्र से छूपाते है। तभी श्रीकृष्ण उसे छीन लेते है। और उसे खोलकर एक मुड़ी तंदुल हथ में लेकर खाने लगते है)

श्रीकृष्ण: वाह! कितने मीठे तंदुल है? (मजाकीया ढंग से रुक्मिणी को अंगुठा दिखाते हुए) मैं यह पूरा ही खा ल्ंगा!

रुक्मिणी: अरे! ऐसा कैसे हो सकता है? भाभीजी का प्रसाद हम भी तो लेंगे! (ऐसा कहकर वह श्रीकृष्ण से गुठरी छीन लेती है और स्वयं खाने लगती है। सुदामाजी यह सब लीला आश्चर्य से देखते रहते है।)

श्रीकृष्ण: (रुक्मिणी के सामने हंसकर) क्षमा करना देवी! आज आप यहां नहीं सोओगी! आज तो हम अपने प्रिय सखा के साथ बातें बतियाएंगे! (रुक्मिणी जी हंसते हुए, मुंह बिगाडने का कृत्रिम अभिनय करती हुइ कक्ष से विदा लेती है। श्रीकृष्ण और सुदामा शय्या पर आमने सामने बैठते है और नेपथ्य से मैत्री का गीत गूंजता है।।("तने सांभरे रे, मने केम विसरे रे")

तीसरा दृश्य:

सूत्रधार: और ऐसे सुदामाजी अपने मित्र द्वारकाधीश को मिले। श्रीकृष्ण ने सुदामाजीकी भलीभांति आगता-स्वागता की। और कुछ दिन द्वारकापुरी के राजमहल का अतिथ्य भोगकर अपने सखा से भावभरी विदाय ली। न सुदामासे कुछ मांगा गया और न ही श्रीकृष्ण ने कुछ पूछा! सुदामा सोचते रहे कि अब खाली हाथ घर जाकर सुशीला को क्या मुंह दिखाउंगा? ऐसे ही

सोचते हुए सुदामाजी घर लौटते है। तभी अपनी कुटियाके स्थान पर कोइ बडा महल देखकर अचंभित होते है)

सुदामाः अरे मेरी कुटिया कहां गइ? (सहसा पुकारते हैं) सुशीला।।सुशीला।।। (पित की आवाज सुनकर सुंदर वस्त्राभूषणोंसे सज्ज सुशीला और उनका पुत्र दौडकर बहार आते हैं, सुदामाजी अपने पुत्र को गले लगाते हैं। सुशीला और पुत्र के बदले स्वरूप और महल को देखकर सब कुछ समज जाते हैं, और उनकी आंखोंमें प्रेम के आंसु बहने लगते हैं। एक सेविका दीप-पुष्पसे सजी हुई थाली लेकर आती है और सुशीला आरती उतारकर सुदामा का स्वागत करती है, सेवक वर्ग पृष्पवृष्टि करते हैं)

सुदामा: हे श्रीकृष्ण! और मैं तुम्हारा प्रेम भरा आतिथ्य देखकर तुमसे कुछ भी मांगना ही भूल गया! मैंने तुम्हें सदैव सखा सखा पुकारा! लेकिन तुम तो अंतर्यामी परमात्मा हो! भला तुमसे मेरा दु:ख कैसे छीप सकता है? आज तुमने अपनी मित्रता का दिव्य उपहार दीया है! (द्वारिका की दिशा में देखकर हाथ जोडते हुए) द्वारकाधीश की जय हो! (सब साथ मिलकर "द्वारकाधीश की जय" बोलते है)

स्त्रधार: श्रीकृष्ण और सुदामा मित्रता का अनुपम आदर्श है। हजारों साल बीत जाने के बाद भी आज लोग उसे नहीं भूले है। एक और आर्यवर्त के सर्वोच्च जननायक होकर भी विनम्न श्रीकृष्ण है, जो मित्रधर्मका अमर संदेश देते है, तो दूसरी और ब्रह्मतेज से परिपूर्ण सुदामा है जो अपने अयाचक व्रत को अखंड रखते हुए श्रीकृष्ण से कुछ भी नहीं मांगते है! भगवान वेदव्यासने इस आख्यान की पूर्णाहूंति करते हुए गाया है,"यद्यपि भगवान अजित है, अपने सुहृद ब्राह्मणदेवता सुदामाजी के अधिन हो गये! भगवान और उनकी ब्राह्मण-भिक्तिक इस पावन चिरत्र को जो सुनता है, उसे भगवान की अतूट भिक्त प्राप्त होती है!" यहां हमें एक सर्वकालिक बोध प्राप्त होता है। सत्ता और संपदा के धनी को विद्या और संस्कार से मंडित विद्वज्जनों का सदैव आदर-सत्कार करना चाहीए। विझडम और वेल्थ यानि कि ज्ञान और समृद्धि दोनों के समन्वय से ही राष्ट्र का समृचित उत्कर्ष हो सकता है। जय द्वारकाधीश जय भक्तराज सुदामा!





वीर विक्रमादित्य और भगवती मां हरसिद्धि का प्रसंग



सूत्रधार: मैं सागर! अनंत और गहन! मैंने इस पावन भूमि की महान ऐतिहासिक घटनाओं को अपनी लहरों की आंखों से देखा है और इन महान अस्मिताओं के चरण पखारे हैं। भारत की सबसे महान आध्यात्मिक अस्मिता है शिव-शिक्त। शिव-शिक्त अविभाज्य दिव्य युगल है। शिव बिना शिक्त नहीं और न शिक्त बिना शिव! पोरबंदर से द्वारिका के यात्रापथ के मध्य में मेरे ही तट पे महादेव की योगसिद्धि स्वरूपा भगवती हरसिद्धिका प्राचीनतम स्थानक है। जिन के नाम से भारतीय संवत्सर अमर है वही उज्जैन के महाराजा वीर विक्रमादित्य देवी के परम भक्त थे। आज से दो हजार साल पहेले के उस स्वर्णिम युग में प्रवेश करें!

(देवी का मंदिर। ब्राहमण देवता वीर विक्रमादित्य से पूजा करवा रहे हैं। देवी सूक्तों के ध्विन से मंदिर गूंज रहा है। पूजा उपरांत विक्रमादित्य मां भगवती से प्रार्थना करते है।)

वीर विक्रमादित्यः हे मां! आप मेरी कुलदेवी है! आप मेरे पर प्रसन्न रहें! आप की कृपा से मैं भारतवर्ष का चक्रवर्ती सम्राट बना हूं! (ऐसा कहकर अपना मूकुट भगवती के चरणोंमें रखते है और साष्टांग दंडवत् वंदना करते है! उसी समय शंखध्विन और झालर-घंटा बजने लगते है! मां के शिरसे पुष्प गिरता है! जिसे वीर विक्रमादित्य अपने सर पे लगाते है। मां की प्रतिमा जैसे सजीवन हो उठती है।)

मां हरसिद्धिः पुत्र विक्रमादित्य! तुम्हारा कल्याण हो! तुमने अपने बाहुबल से मातृभूमि को विदेशी आक्रांताओं की बेडीओं से मुक्त किया है! कौन ऐसी मां होगी जिसे तुम्हारे जैसे पुत्र पर गर्व न हो? हम तुम्हारी राष्ट्रभक्तिसे प्रसन्न हुए!



वीर विक्रमादित्यः मां! मैं तो आप का सेवक हूं! यह सब आप की कृपा का फल है। मेरे लिये क्या आज्ञा है?

मां हरसिद्धिः पुत्र! तुमने सामरिक युद्ध तो जीत लिया है! अब तुम्हें इस महान भारतवर्ष का पुनरोद्धार करना है! ऋषिओं एवं देवों की इस पावन भूमि को फिर से पुनर्पल्लवित करना है!

वीर विक्रमादित्य: (सोच में डूब जाते है, फिर प्छते है) हां मां! लेकिन मैं तो क्षत्रिय योद्धा हूं! यह सब कैसे होगा? आप ही बताइए!

मां हरसिद्धिः (हंसते हुए) तुम बडे ही चतुर हो, बेटा! सब कुछ मुझसे ही शिखोगे क्या?

वीर विक्रमादित्यः (हाथ जोडकर मुस्कुराते हुए) मां आप मेरे इष्टदेव महाकाल की शक्ति है! सभी सिद्धियां आप के श्रीचरणों में समर्पित है! वैसे भी मां ही पहली गुरु होती है! और जब आज जब आप का साक्षात्कार हो गया है, तो यह अवसर भी क्युं गंवा दूं!

मां हरसिद्धिः विक्रम! तुम्हारी विनमता और भिक्त से हम और प्रसन्न हुए! सुनो! राजा का प्रथम कर्तव्य है कि अपनी प्रजा का पालन करें! जैसे तुम मेरे पुत्र हो ऐसे ही सभी प्रजाजन मेरी ही संतान है! इसिलये उनके सुख को अपना सुख और उनको अपना दुःख समजो।

वीर विक्रमादित्यः अवश्य मां! ऐसा ही होगा!

मां हरसिद्धि: और भी एक काम तुझे करना है।

वीर विक्रमादित्यः वह क्या मां?

मां हरसिद्धिः राज्य मात्र सेना और शस्त्रों से नहीं बनते! ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश से बनते है। अपने राज्य में शिक्षा-दीक्षा की उत्तम व्यवस्था करो। कला और साहीत्य का पोषण करो। और याद रखो, जल ही जीवन है। इसलिये गांव गांव तालाब और बावडियां बनाओ। कृषि और पशुपालन का विकास करो। तुम्हारे पुण्य और परिश्रम से तेरे राज्य में कभी भी अकाल नहीं होगा!



वीर विक्रम: मैं धन्य हो गया मां! मैं अपने राज्य को सही मायनेमें रामराज्य बनाने का आप को वचन देता हं!

मां हरसिद्धिः पुत्र विक्रमादित्य! मैं तुम्हारे इस संकल्प से प्रसन्न हूं! कोइ वर मांग लो! वीर विक्रमः मां मेरे राज्य में कभी अकाल न हो! कोइ भूखा न सोये! कहीं से भी दूखकी आहट न स्नाइ दे!

मां हरसिद्धिः वाह पुत्र! तुमने आज वह वरदान मांगा है जो किसी राजाने कभी नहीं मांगा! तुमने अपने लिये कुछ भी नहीं मांगा! अपनी प्रजा के लिये मांगा है! इसे तो मुझे देना ही होगा! तथास्तु! लेकिन तुम्हारे लोककल्याण के आदर्शने मेरा मन जीत लिया है। इसलिये मैं एक और वरदान मांगने के लिये कहती हूं!

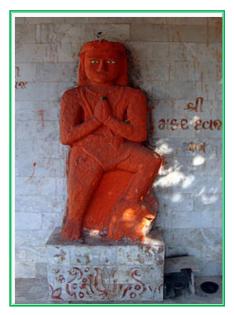
वीर विक्रमादित्यः वैसे तो आप के दर्शन ही सबसे बडा वरदान है! लेकिन फिर भी मां के सामने हाथ फैलाने में संकोच नहीं करूंगा! मेरी राजधानी उज्जयिनीमें भगवान महाकाल बिराजे है। मैं उनकी नित्य सेवा करता हूं! अब एक ही मनोकामना है कि आप स्वयं वहां पधारें! ताकि मुझे आपकी नित्य सेवा और दर्शन का अवसर मिले!

मां हरसिद्धि: जहां तेरे भोलेबाबा वहां मैं! मैं तो सदैव महाकाल के संग ही हूं! फिर भी तेरी इच्छा है तो मैं अवश्य वहां इसी स्वरूप में प्रकट होउंगी। तुम शीप्रा के तट पर मेरे मंदिर का निर्माण करो। मैं सदा-सर्वदा तुम्हारे साथ ही रहूंगी! तुम्हारा कल्याण हो वत्स! कल्याण हो! (मां के वरदान के स्वरूप वीर विक्रमादित्य पर पुष्पवर्षा होती है! वीर विक्रमादित्य मां के चरणोंमें वंदन करते है! ब्राहमण देवता राष्ट्रसूक्त का गान करते है।)

सूत्रधारः एसी मान्यता हे कि दोपहर की आरती के समय माँ उज्जैन और सांध्य आरती में मेरे किनारे पर बने ईस हरसिद्धि मंदिर में प्रकट होती है! और मैं रत्नाकर सागर माँ भगवती के चरणों को हर शाम पखारता हूं। और राजा विक्रमादित्य को मां के नित्य साहचर्य और भिक्त का वरदान मिला। यही है हमारे परदुःखभंजक वीर विक्रम, जो रात को भेष बदलकर अपनी प्रजा के हाल देखने स्वयं ही देखने जाते थे। जिन्होंने न मात्र शकों को पराजित किया और मातृभूमि को मुक्त किया, अपने राज्य को सुसंस्कृत, स्वस्थ और समृद्ध बनाया। उनके राजदरबार में महाकवि कालिदासजैसे नव रत्न बिराजमान थे! मां भारती के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य करके महाराजा विक्रमादित्य इतिहास के पन्नों पर अमर हो गये!

(नेपथ्य से मां हरसिद्धि की जय! बाबा महाकाल की जय! परदु:खभंजक महाराज वीर विक्रमादित्य अमर रहो! जैसे नारे गूंजते है)

हनुमानस्त मकरध्वज का प्रसंग



स्त्रधारः भगवान शिवजी के अवतार और भगवान रामजी के सहायक, सखा एकनिष्ठ कर्मयोगी बजरंगबलीको कौन नहीं जानता? लेकिन क्या आप जानते है, पोरबंदर और पवनसुत हनुमानजीका अंतरंग संबंध है? जी हां! हनुमानजी के वंशज की यह लीलाभूमि है! आप कहेंगे कि हनुमान तो आजीवन बालब्रहमचारी है, तो फिर उनके वंशज कहां से आये? तो यह चरित्र बहुत विस्मयकारी है! हुआ युं कि लंकादहन के पश्चात् जब वायुपुत्र अपनी थकान उतारने समंदरमें डूबकी लगाते है। तब उनके पसीने की बूंद एक मछली के पेट में जाती है। और उसी तेज के कारण वह गर्भ धारण करती है। उस मत्स्य के गर्भ से एक महान बलशाली पृत्र अवतरित होता है, उसका नाम था मकरध्वज!

जो रावण के भाइ और पाताल के राजा अहीरावण को मिलता है।अहीरावण उसे अपना द्वारपाल बनाता है। वही अहीरावण अपने भाइ रावण को बचाने के लिये राम और लक्ष्मण को मायासे मूच्छित करके पाताल में ले आता है। इस और हनुमानजित रामजी को ढूंढते हुए पाताल में आते है। जहां पर उनकी मुलाकात मकरध्वजसे होती है। आइए इस रोमांचक घटना का आस्वाद करें) (पाताल लोक का प्रवेशद्वार। जहां पे हनुमानजी आते है। मकरध्वज उसे रोकता है)

हन्मानजी: अरे! तुं कौन है? मेरा रास्ता क्युं रोक रहा है? हट जा मेरे रास्ते से!

मकरध्वजः मैं महाराज अहीरावण का द्वारपाल हूं। उनकी आज्ञा के बिना किसीको अंदर नहीं जाने दूंगा!

(हनुमानजी उसको अच्छी तरहसे देखते ह्ए)

हनुमान: तुं हट जा मेरे रास्ते से! तुं जानता नहीं मैं कौन हूं।

मकरध्वजः आप जो भी है, मुझे हराये बिना आप अंदर नहीं जा सकते।

हनुमान: लेकिन तुं है कौन?

मकरध्वज: मैं महापराक्रमी पवनपुत्र हनुमानजी का बेटा हूं, मेरा नाम है मकरध्वज!

हनुमानजी: (हंसते हुए) लो करो बात! मैं स्वयं हनुमान हूं! और मैं यह नहीं जानता कि मेरा भी कोइ पुत्र है! अच्छा जो भी हो, मेरे रास्ते से हट जाओ। मैं अपने प्रभु श्रीरामजी को लेने आया हूं! मकरध्वज: (प्रणाम करते हुए) पिताजी आपको कोटि कोटि वंदन! आपके दर्शन से मैं धन्य हो गया!

(हनुमानजी यह सुनकर क्षणभर ध्यानस्थ होते है। और पूर्वकालिन उस घटना का बोध प्राप्त कर लेते है)

हनुमानजी: चिरंजीवी भव! यशस्वी भव! पुत्र अब तुम मेरा मार्ग छोड दो और मुझे अंदर जाने दो।

मकरध्वजः पिताजी आप स्वयं एकनिष्ठ सेवा का महान उदाहरण है। आप मुझे अपने कर्तव्यसे विमुख होना कैसे कह सकते हैं? आप को अंदर जाना है तो मुझे हराना होगा! (ऐसा कहकर हंसता है)

हन्मानजी: ठीक है! मेरे रामजी की जैसी इच्छा! आओ प्त्र मल्लय्द्ध करें!

(दोनों मे भयंकर बाहुयुद्ध होता है। अंत में हनुमानजी उसे बांध लेते है। और अंदर प्रवेश करते है। यहां पर हनुमानचालीसा/सुंदरकांड का कोइ दोहरा नेपथ्य से बजता है और थोडी देर के बाद हनुमानजी अहीरावण का वध करके राम-लक्ष्मण को लेकर आते है)

श्रीराम: (द्वार पर बंधक बने हुए मकरध्वज को देखकर) अरे हनुमंत! यह कौन है? उसे क्या त्मने बांधक बनाया है?

हनुमानजी: जी प्रभु! यह मेरा ही पुत्र मकरध्वज है। जो यहां द्वारपाल था! मुझे उसे हराकर बंदी बनाना पड़ा तभी तो मैं आपकी सेवामें आ पाया!

श्रीराम: वाह तो यही है त्म्हारा प्त्र मकरध्वज! उसे छोड दो।

(हनुमानजी मकरध्वज को छोडते है। वह प्रभु श्रीराम के चरणों में वंदन करता है)

श्रीराम: तुम्हारा कल्याण हो वत्स! (उसे गले लगाते हुए और पीठ पर हाथ फेरते हुए) कहीं पिताजीने ज्यादा चोट तो नहीं पहूंचाइ? (ऐसा कहकर हनुमानजी के सामने हंसकर देखते है। हनुमानजी हाथ जोडकर अपनी विवशता प्रकट करते है)

मकरध्वजः नहीं भगवन्! पिताजी के कारण ही आज मुझे मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु के दर्शन हुए! अब मेरे लिये क्या आज्ञा है?

श्रीराम: पुत्र! अब तुम पाताल लोक का शासन करोगे। तुम अपने महान पिता के पथ पर चलोगे! तप,संस्कार और सेवा की सुवास फैलाओगे। आर्यसंस्कृति का जतन करोगे! ऋषिमुनि और साधुजनों की रक्षा करोगे! यही तुम्हारा कर्तव्य है! हमारा पाताल लोक में आना, हनुमान द्वारा अहीरावण का वध और तुमसे मुलाकात का यही रहस्य है! वत्स! तुम्हारी कीर्ति अमर रहो! (रामजी, हन्मानजी और मकरध्वज के जयनाद)

सूत्रधार: और इस तरह मकरध्वज पाताल लोक के शासक बने। विद्वानों ने पाताल लोक शब्द का अर्थघटन कीया है। उनके अनुसार वह कोइ समुद्रिकिनारे बसी हुइ कोइ नगरी थी। विदेशी आवागमन के कारण कालांतर में लोकजीवन में कोइ विकृति आ गइ। हनुमानजी के वंशजोंने भारतीय राष्ट्रीय चारित्र्य का पुन: संवर्धन कीया। मकरध्वज के पुत्र मयुरध्वज बडे ही पराक्रमी और दाता थे। एक ब्राहमण के बालक को सिंह से बचाने के लिये उन्होंने अपने शरीर पर करवत

चलाइ थी! कहते है कि आज का मोरबी मयुरध्वज की बसायी हुइ नगरी है। उनके प्रतापी वंशमें तामध्वज जैसे महान राजा हुए। उनके वंशज महाराजा जेठीध्वज के नाम परसे जेठवा वंश नाम हुआ है! जेठवाओंने पोरबंदर के नजदीक भाणवड तहसील के घूमलीमें राजधानी बसाइ और महान स्थापत्यों का निर्माण कीया। उसी वंश में कइ महान पराक्रमी, उदार और चारित्र्यवान राजा हुए। राजकुमारी सोन और हलामण जेठवा की रोमांचक स्नेहकथा, परस्त्री को मात समजने वाले मेह जेठवा और जिसका शर कट जाने के बावजूद धड लडता रहा ऐसे पराक्रमी नागाजण जेठवा की कहानीयां आज भी लोकबोलीमें अमर है। याद रहे, यह सब हनुमानजी के वंशज थे! इतना ही नहीं, पोरबंदर राज्य के राजध्वज में भी हनुमानजी का चित्र था!)

घूमली के प्रतापी जेठवा राजवंश का विहंगावलोकन



स्त्रधारः मैं सागर! मेरी गहराइ में इस भूमि के कइ रहस्य छीपे है। पोरबंदर का इतिहास इतना समृद्ध है कि एक पुस्तक में समाना असंभव है। आइए इतिहास के पन्नों को थोड़ा तेजी से पलट देते है। हनुमानजी के वंशज जेठवा राजाओं की राजधानी घूमली थी। जो आज देवभूमि द्वारका जील्ले के भाणवड तहसील में समाहीत है। इस वंश में कइ वीर और चारिज्यवान राजा हुए। रत्नाकर से निकले कुछ नवलखे मोतीओं को याद करें। सौंदर्य, विद्वता और शौर्य के त्रिवेणी संगम समान हलामण जेठवा और सोनकुंवरी के दिव्य प्रेम और विवाह की कथा अत्यंत रोचक है। सोनकुंवरी के सोरठा काव्यों में छीपे सवालों का काव्यात्मक उत्तर देकर हलामण उसे प्राप्त करते है।

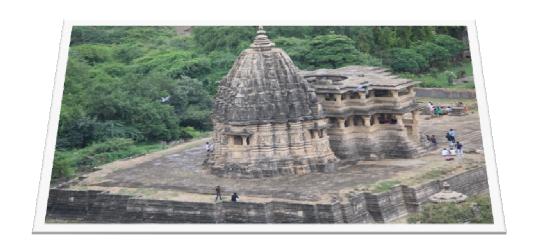
'रासमाला' के लेखक कर्नल टॉड और कवि नथुराम सुंदरजीने इस कथा को बखूबी अंकित किया है।

(पश्चादभू में सोनकुंवरी और हलामण के सोरठा का युगलगान)

8 हि नवरो हिनानाथ, ते हि हरणे हलामण घड्यो, ते जेठो म्हारी पास, जहोंतेर जरडानो घणी! એક છે ઇन्द्र राજીयो, जीको माधव काण, त्रीको हलामण केठवो, वेणु घणी वजाण! (सोन) ગત-ગેમર, हेमवरण, लभर नेत्र लणडार, सिंह-लंड, पूनम-वहन, सोनल सुंहर नार! पगमां ठणडे डांजीओ, हैंडे हलडे हार, गाजेल हेमनी गुकरी, येवी सोनल सुंहर नार! (हलामण) ऐसा ही पावन नाम गंगाजळीया मेह जेठवा का है। जिसने एक हीरण के शिंग में मंत्रबद्ध मेघ को मुक्त करके धरती को संतृप्त किया था। पोरबंदर के पास शिंगडा नाम का गांव इस कथा का प्रमाण है। वीर नागाजण जेठवा के धड का युद्धभूमि में लडना आज भी श्रवीरों को प्रेरणा देता है।

(पश्चादभू में 'ધડ ધિંગાણે એનાં માથાં મસાણે મારે પાળિયો થઇને પૂજાવું, ધડવૈયા મારે ઠાકોરજી નથી થાવું' गीत का गान)

गायों की रक्षा हेतु लग्नमंडप से उठकर रणभूमिमें दौड जानेवाले वीर शहीद राखायत और सोन कंसारी की प्रण्यकथा भी लोकहदय में अमर है। ज्ञात इतिहास के अनुसार ईसा की बारहवीं से लेकर सोलहवीं शताब्दी तक सौराष्ट्र के सागर किनारे पर फैले हुए इस राजवंश के कइ पुरातत्त्वीय अवशेष मिलते है। बड़े बड़े महालय, किल्ले, मंदिर और जलाशयों के अवशेष आज भी दर्शनीय है। चौहदवी सदी के अंत में घूमली के पतन के बाद करीब दौसो साल तक राणपुर बसाकर जेठवाओंने साशन कीया। पडोशी जामनगर राज्य के साथ सतत संघर्ष होता रहा। फिर इतिहास एक और क्रूर करवट लेता है। राणा रामदेवजी की हत्या होती है और उसके पुत्र राणा भाणजी अपनी राणी कलाबाइ के साथ पोरबंदर का आश्रय लेते है। सतत भागदौड के कारण उनका अकाल देहांत होता है। लेकिन इसी दारुण अंधकार में हमें एक दिव्य ज्योत का दर्शन होता है। वह है, राजमाता कलाबाइ! जो अपने बालकुमार को लेकर छाया गांव में आश्रय लेती है। यहीं से हम इतिहास की सोलहवी शताब्दी का अन्संधान करते है।



राजमाता कलाबाइ का शौर्यवान एवं पावन चरित्र

(एक छोटे से देहाती मकान का दृश्य। माता कलाबाइ अपने कुंवर खीमजी को पलने में झूला रही है। पश्चादभू में वीररस से भरपूर हनुमानचालीसा बजती है। तभी वहां मेर और रबारी जाति के कुछ लोग प्रवेश करते है)

अग्रणी: (चरण वंदना करते ह्ए) राजामाताने घणी खम्मा! क्ंवर खीमजी ज्ग ज्ग जीयो!

कलाबाइ: (दुखणां लेते हुए, आशिष देते हुए) द्वारकाधीश आप का कल्याण करें! आप सब कुशल मंगल तो है?

दूसरा अग्रणी: माताजी! सागर किनारे एक जहाज तूटा हूंआ पडा था। उसमें से कुछ इंट आप के लिये भेजी थी।

कलाबाइ: (हंसते हुए ऊठती है, पानी के मटके के पास रखी इंट दिखाती हुए) यही नां? देखीये यह इंट! (इंट की उपरी सतह को दुर करते हुए) मेरे भोले भाइ! तुम्हें पता नहीं, तुमने क्या भेजा है! यह सब इंट सोने की है!

तीसरा अग्रणी: (नजदीक जाकर अपने हाथ में लेकर देखते हुए) अरे राणी मां ! यह तो सचमुच सोने की इंट है!

कलाबाइ: हां सचमुच! लेकिन यह इंटें मैं कैसे रख सकती हूं? तुम सब लोग एक एक इंट ले जाओ और अपना नय घर बनवा लो!

पहला अग्रणी: राजमाता! हम इसे ले जाकर क्या करेंगे? हम तो ठहरे गरीब किसान! हमें तो बस बाजरे की रोटी और कटोरा भर दूध मिले तो भी बहुत है। आप राजमाता है। आप ही इसे संभालिये।

कलाबाइ: तुमने ठीक कहा! अब इसे द्वारकाधीश का प्रसाद समजो। आज से तुम सुखी रोटी नहीं खाओगे! ले जाओ सब सोना और घर-घर में गोरस की नदीयां बहा दो। मेरे बच्चे अब मख्खन और घी खायेंगे और सशक्त बनेंगे!

दूसरा अग्रणी: राणी मां की जय हो! आप साक्षात् अन्नपूर्णा है! मां इस उपकार को हम कभी नहीं भूलेंगे! (राजमाता प्रसन्नता से आशिष देती है)

तीसरा अग्रणी: और राजमाता! हम आप को वचन देते है कि हम अपना तन-मन आप और (पलने के सामने देखकर हाथ जोडकर) हमारे नन्हें राजकुंवर पर न्योंच्छावर कर देंगे!

सब अग्रणी: हां हम लडेंगे! खूब लडेंगे! अपनी भूमि को फिर से स्वतंत्र करेंगे! राजमाता कलाबाइ अमर रहो! राजकुंवर खीमजी की जय हो!

सूत्रधार: और इस तरह राजमाता अपनी जनता को दूध-घी का उपहार दीया। उस के बदले में सशक्त जवानों ने अपना शौर्य उनके चरणों में रख दीया। कलाबाइ ने स्वयं इस सेना की अग्वाइ की। और राज्यश्री फिर से हांसल की। कहा जाता है कि इस युद्ध में दो हजार से ज्यादा

जवानों ने शहादत दी। राजमाता ने छाया में राजधानी बसाइ। लेकिन वह ग्रामीणों का उपकार कैसे भूलती? मेर और रबारी समाज को उन्होंने जमीन और गाम-गरास से नवाजा! राजमाता कलाबाइ में सर्व महान गुणों का समन्वय था! विपत्ति में धैर्य, कार्यों मे उत्साह, दक्षता और कौशल्य, प्रजा वत्सलता, राजकाज में न्यायबुद्धि एवं उदारता! आइए मां भारती के ऐसे महान नारीरत्न को वंदन करें! उनसे प्रेरणा लें। अपनी माताओं और बहनों का आदर, पालन-पोषण और सशक्तिकरण करें! स्वस्थ, पुष्ट और समर्थ भारतवर्ष का निर्माण करें!

संस्कारमूर्ति राणा सरतानजी का प्रेरक चरित्र



सूत्रधारः राजमाता कलाबाइ के प्रेरणा पीयुष से नवपल्लवित जेठवा वंश का फिर से उदय हुआ। उन के वंशज भी बहुत पराक्रमी थे। इन्होंने मेरे किनारे पर अपने राज्य का विस्तार किया। इसा की अठारहवीं सदी के मध्यकालमें राणा सरतानजीने राजकाज संभाला और बखूबी निभाया। अब जेठवाओं की राजधानी छाया से पोरबंदर आ गइ। मेरे किनारे पर व्यापारी चहलपहल भी बढ गइ। राजर्षि चाणक्य की नीति को अनुसरते हुए राणा सरतानजी ने राजस्व को मर्यादित रखा और व्यापार उद्योग को बढावा दिया। अपने पडोशी राज्यों के साथ आवश्यकता अनुसार सामदाम-दंड-भेद नीति अपनाइ। यह सब गुण तो आप को भारत के अन्य कइ राजा-महाराजाओं में मिल जायेंगे पर सरतानजी उन सब से निरालेथे। वह मात्र रणयोद्धा नहीं थे, कला-संगीत और अध्यात्म के उपासक भी थे! उन्होंने काव्य प्रकाश नामक कवितासंग्रह का सर्जन किया था! आज भी सुदामा मंदिर के पास ग्रीष्म भवन है, जहां पर सुलतानजी काव्य संगीत की साधना कीया करते थे!

(ग्रीष्म भवन का दृश्य। सुंदर उपवन है। चारों और फव्वारें जलबर्षा कर रहे है। खुशनुमा वातावरण है। कवि-संगीतज्ञ के बीच राणा सुलतानजी बिराजमान है।)

राणा सरतानजी: मित्रों! आज मैं आप को कुछ छंद सुनाना चाहता हूं! जो मैंने आज सुबह लिखे है!

कवि-संगीतज्ञ: जय हो! राणासाहब !

राणा सरतानजी: (छंद स्नाते है, साथ में मृदंग पर संगत होती है)

मगन देवता भूमि, यगन जल वरनत देवा,रगन अगनि ही जानि, सगनकौ पवन सुभैवा; तगन अकाश ही होई, जगनकौ सूर वखानो, भगन छिपाकर सजत, नगनको नाग सुजानो; यह अष्टदेवता अष्टमन, निजकुलरीति सरव भरन, है जयकारी सुलतानको सदा रूप रक्षा करन! (सब साथी गरिमापूर्ण ढंग से जयकार कतरे है)

एक कवि: महाराज, अद्भूत! आज आपने सांख्य दर्शन को सरल भाषामें उतारा है! साथ में अलंकार, अनुप्रास, व्यंजना और छंद का भव्य अनुसंधान किया है!

राणा सरतानजी: (राणा सुलतानजी बड़े आदर से प्रसंशा को स्विकार करते हुए)यह सब तो मां सरस्वती की कृपा है! और आप जैसे कलागुरुओं के सत्संग का फल!

दूसरे कवि: महाराज! आज आपसे एक और कविता सुनने का मन कर रहा है। (सभी इस में सूर पूराते है)

राणा सरतानजी: (थोडा सोचते हुए) सुनीये! पिछले कुछ दिनों से मेरे मन के अंदर उठ रही यह आवाज!

भोगसहीत भरपूर, आयु यह बीत गइ सब, तप्यो नहीं तप भूंढ, अवस्था थिकत भय अव; काल न कितहु खात, वयस वह चली जात नित, तृद्ध भइ नही आश, तृद्ध वय भउ छांड हीत; अजहूं अचेत चित समजके देह गहसो नेह तज, दु:खदीषहरन मंगलकरन, हरिहरपद सरतान भज! (यह कविता सूनकर सब मौन हो जाते है, राणा के मुख पर कोइ गंभीर संकल्प है)

तीसरे किव: राणाजी! आज आप की किवता आत्मा की गहराइ से आ रही है! क्या बात है? हमने पहले कभी आपसे ऐसी गंभीर वाणी नहीं सुनी!

राणा सरतानजी: आप सब मेरे अंतरमन के सहप्रवासी है! आप से क्या छिपाना? मैं कुछ दिनों से विचार कर रहा हूं कि मेरा वानप्रस्थ आ गया है। राजकुमार हालोजी बडे ही संस्कारी है। पोरबंदर की जनता का भलीभांति पालनपोषण करेंगे।

पांचवे कवि: तो क्या महाराज अब।।।

राणा सरतानजी: हां कविराज आप बिल्कुल सही सोच रहे है। अब मैं राजकाज, राजमहल और राज-परिवेश तीनों को छोडकर यहीं सुदामाजी के सांनिध्य में ठाकुरजी की सेवा करुंगा। यही मेरी मनोकामना है!

पहले किव: राणाजी! आप धन्य है! और हम सब भी धन्य है कि आप जैसे महाराणा का सत्संग मिला!

दूसरे कवि: पर महाराज! हमारा क्या होगा? आप का सांनिध्य छूट जाना हमारे लिये बडा पीडादायक होगा!

राणा सरतानजी: आप को शोक करने कोइ आवश्यकता नहीं! अब आप एक राजा को नहीं एक साधक मित्र को मिलेंगे! हम सब यहीं बैठकर अगमनिगम की आराधना करेंगे!

सब कविगण: राणा सरतानजी की जय हो! राणासाहबकी कीर्ति अमर रहो!

संतकवयित्री लीरबाई माँ

દેરે દીવા કાઉ કરવાા।

જો મઈ રિયાં અંધારાજી



सूत्रधार: पोरबंदर की धरती शूरवीरों की भूमि है, दानवीरों की भूमि है और संतों की भूमि है! अब मैं आप को सौराष्ट्र के संत समाज में श्रद्धा की अचल ज्योत के समान एक कवियती लीरबाइ मां की कथा सुनाने जा रहा हूं। लीरबाइ संत युगल जीवणदास-सोनबाइ युगल की शिष्या थी। पोरबंदर से नजदीक मोढवाडा गांव में सन् अठारसौ चौबीस में प्रकटने वाली यह दिव्य ज्योत मात्र बावन वर्ष की आयु में संतत्व की सुवास फैलाकर महानल में लीन हुइ! बचपन से ही वह बडी आस्थावान थी। मांबाप की इच्छावश सांसारिक रूप से विरक्त लीरबाइ का विवाह वजसी नामक एक मेर युवक से हुआ। लेकिन उनका मन तो मीरां की तरह परमात्मा से मिल चूका था। फिर क्या होना था? लीरबाइ अपने पित के घर से निकलकर गुरु आश्रम आ जाती है। अपनी पित्र को किसी भी तरह वापस ले जाने के इरादे उसका पित भी वहां पहूंचता है। आइए, वहीं से इस पावन चिरत्र का अनुसंधान करें।

(आश्रम का दृश्य। लीरबाइ पानी का घडा लेकर आश्रम आ रही है। पीछे से वजसी आ रहा है) वजसी: (पैड के नीचे बैठे एक युवक को पूछता है) ए जवान, जीवणदास और सोनबाइ का आश्रम कहां है? युवक: जीवणदास बापू और सोनबाइ आइ बोलो! हां उनका आश्रम यहीं है। लेकिन आप किसे ढूंढ रहे है? वजसी: बापू होगा तेरा! (ऐसा कहकर तिरस्कार से हंसता है) मैं अपनी घरवाली लीरबाइ को ढूंढ रहा हूं। वह मेरा घर छोडकर यहां चली आइ है। उसे ले जाउंगा। और साथ में इन दोनों बावा और बावी की टांगे भी तोड दूंगा!

युवक: (इस अशिष्ट युवक के सामने आश्चर्य और खेदपूर्ण भाव से देखते हूंए) अच्छा! तो तुम यहां इस इरादे से आये हो? तो देखो वहां पानी ले कर जा रही है, लीरबाइ! जा कर उसी से पूछ लो! (ऐसा कहकर लीरबाइ की

और इशारा करता है। वजसी उन दोनों स्त्रीयां के पीछे चल देता है। जिस में से एक थी लीरबाइ खुद और दूसरी थी उसकी गुरु सोनबाइ! थोडे पीछे चलकर वजसी उनकी बातें सूनने का प्रयास करता है।)

सोनबाइ: अरे लीरबाइ! तुझे अपने पति के घर जाने का मन नहीं करता है?

लीरबाइ: मैं क्या करुं? मेरा मन संसार में लगता ही नहीं!

सोनबाइ: तो फिर तुंने वजसी से विवाह क्युं कीया? सुना है, तेरा पित तेरे मांबाप को काफी परेशान करता रहता है।

लीरबाइ: मैंने मां और बापू के मन को रखने के लिये विवाह तो किया। आज भी वजसी ही मेरा पित है। मैंने किसी और आदमी के सामने आंख उंची करके नहीं देखा! लेकिन मैं ही उसे संसार का सुख नहीं दे पायी। उसमें वजसी का क्या कसूर? उसका गुस्सा सही है। लेकिन मैं भी मजबूर हूं! मैं क्या करुं?

सोनबाइ: यह तो ठीक है। लेकिन यदि वजसी यदि अपना स्वभाव बदल दे और तुझे अपने मारग पर चले के लिये छूट दे तो तुं क्या करेगी?

लीरबाइ: तो फिर मैं उसके पास जरुर जाउंगी। उसे समजाउंगी, उसे मनाउंगी। फिर हम दोनों आप की तरह संतों जैसा जीवन जीयेंगें! लेकिन गुरु मां क्या ऐसा संभव है?

सोनबाइ: यह सब तो काळीया ठाकर के हाथ में है, बेटा! हम तो यही चाहेंगे की तेरे साथ वजसी का भी बेडा पार हो!

(पीछे चल रहे वजसी ने यह संवाद सूना तो उसका गुस्सा शांत हो जाता है। वह लाठी फेंककर उन दोनों के आगे आ कर उनके पैर मैं गिर जाता है)

लीरबाइ: (वह वजसी को पहचान लेती है, और पीछे हट जाती है, ताकि वजसी का हाथ उस के पैर को न छू ले) अरे अरे यह क्या कर रहे है? आप तो मेरे भरथार है!

वजसी: आज तुमने मेरे मन का मैल धो दिया लीरबाइ! मुझे माफ कर दो! और मां सोनबाइ! मैं भी कितना पापी हूं! आप जैसे संत को मारने के लिये यहां आया था! धिक्कार है मुझे!

सोनबाइ: नहीं बेटे वजसी! पस्तावा तो हवन के अग्नि से भी पावन है। तेरे इन शब्दों के साथ अब तेरे सब पाप धूल गये है!

वजसी: बस तो मां सोनल आइ! अब मुझे आप के चरणों में जगह दिजीये! मेरे पर कृपा किजीये। मुझे कंठी पहनाकर आप का चेला बनाइए। फिर मैं लीरबाइ को ले जाउंगा। उसे हिर भजन और संत-समागम की पूरी छूट दूंगा।

लीरबाइ: (उनकी आंखों में खुशी के आंसु उमड उठते हैं) हे मेरे ठाकर! आज तुं ने मेरी सुन ली! आज मुझे मेरा जीवनसाथी मिला दिया!

(वहीं गुरु जीवणदासजी आ जाते है। उन्होंने संवाद सुन लिया है। वजसी और लीरबाइ दोनों उनके चरणों में वंदन करते है!)

सूत्रधार: और अब लीरबाइ अपने पतिघर आ जाती है। वजसी भगत भी बडे भाव से संतसेवा और भजन-किर्तन में जुड जाते है। दिनदु:खीयां की सेवा, अभ्यागत को भोजन और अहर्निश हरिभजन! लीरबाइ ने ऐसी आहलेक जगाइ की सुदामापुरी से द्वारका तक के पूरे पंथक में लीरबाइ मां की कीर्ति फैल जाती है। आज भी मेरी गहराइ में भक्त कवयित्री लीरबाइ मां के रचे भक्तिरस के मधुर भजन गूंजते रहते है! (मां लीरबाइ का भजन पार्श्वभूमि में गूंजता है)

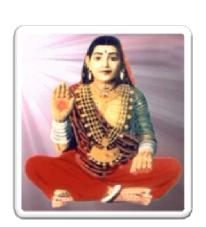
रमतो जोगी रे क्यांथी आव्यो, आवी मारी नगरीमां अलख जगायो रे, वेरागण हूं तो बनी।

काची केरी रे आंबा डाळे, एनी रक्षा करे कोयलराणी रे,

कोरी गागर रे ठंडा पाणी, एवां पाणीडां भरे नंद केरी नारी रे।

कान में कुंडळ रे जटाधारी, एने नमणुं करे नर ने नारी रे।

बोल्यां बोल्यां रे लीरबाई, मारा साधुडां अमरापर म्हाले रे।



राजमाता रुपाळीबा और राणा विकमातजी: सुशासन और जनकल्याण के महान आदर्श



सूत्रधार: भारतवर्ष ने कई महान विदूषी एवं वीर नारीरत्नों को जन्म दिया है। मध्ययुग में भी यह परंपरा जीवित रही है। माता जीजाबाइ ने छत्रपित शिवाजी महाराज जैसे महान पुत्ररत्न का उपहार दिया तो इन्दौर की महाराणी अहल्याबाइने सात्त्विकता और जनकल्याण का महान आदर्श स्थापित किया। जो हाथ पलना झूला सकता है, वह शमशेर भी उठा सकता है, इस बात का प्रमाण देनेवाली झांसी की राजमाता लक्ष्मीबाइ का नाम वीरांगनाओंमें शिर्षस्थ है। पोरबंदर की शौर्यभूमिने ऐसे दो नारीरत्नों को जन्म दिया था। राणी कलाबाइ की बात हमने की। अब एक और राजमाता रुपाळीबा की बात करता हूं। उन्नीसवी शताब्दी का पूर्वार्ध है। ब्रिटीश कंपनी सरकार ने पूरे भारत को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। सौराष्ट्र के छोटे बडे राजा-महाराजा भी कंपनी सरकार का लोहा मान चूके है।

(राजमहल के दिवानखंड का दृश्य। राजसभा में दिवान और कुछ दरबारी और कुछ नागरिक भाइ-बहन बैठे है। ओझल परदे के पीछे राजमाता रुपाळीबा अपने बाळ राजकुमार विकमातजी को लेकर आती है)

छडीदार: सावधान! परम योगीश्वर, भगवान राम के सेवक महा चारित्र्यवान भगवान हनुमंत के वंशज पराक्रमी जेठवा कुल की राजमाता रुपाळी बा पधार रही है! (दिवान और दरबारी सब अपनी जगह पर खड़े होते है, ओझल परदा के पीछे गोद में राजकुमार विकमातजी को लेकर राजमाता रुपाळीबा लकड़ी के सादे आसन पर बिराजमान होती है। उन के पीछे परिचायिका खड़ी है।)

दरबारी:हनुमानजी महाराजकी जय हो! जेठवा कुल अमर रहो! महाराणी रुपाळी बा की जय हो! राजकुमार विकमातजी अमर रहो!

(सब दरबारी और नागरिक दोनों हाथ उंचे कर के इस जयकार में सामिल होते है। महाराणी सर झुकाकर सब का अभिवादन लेते हुए सब को बैठने का इशारा करती है। सब बैठ जाते है)

राजमाता रुपाळीबा: भाइओं और बहनों! आप सभी पोरबंदर वासीओं के प्यार के लिये मैं बहुत कृतज्ञ हूं! दिवान साहब, हमारे राज में सब कुशल मंगल तो है ना? कोइ भाइ-बहन को किसी बात की फरियाद तो नहीं है?

दिवान: राजमाता! आप की जय हो! कुमार विकमातजी अमर रहो! एक मां जैसे अपने बच्चे की परवरीश करती है ऐसे ही आप सभी का ख्याल रखती है! यदि कोइ समस्या होती है, तो आप के दरवाजे सभी के लिये दिनरात खुल्ले रहते है!

राजमाता: यही तो राजा का कर्तव्य है। और हम तो परदु:खभंजक भगवान हनुमान के वंशज है! मात्र राजपरिवार ही क्युं? पोरबंदर के सभी निवासी इसी धरोहर के हकदार है! लेकिन यह याद रहे, एक सुखी राज्य के लिये समृद्ध राजकोष, सबल सैन्य और पडोशी प्रदेशों के साथ अच्छे संबंध जरुरी है! इसी बात पर मैं चिंता करती रहती हं।

दिवान: आप ने सही फरमाया राजमाता! राजकोष की बात करें तो पोरबंदर के बंदर पर होनेवाला व्यापार ही हमारी मुख्य आय है। लेकिन कंपनी सरकार इसका आधा हीस्सा ले जाती है। इसलिये राजकोष अकसर खाली रहता है। अब हमारे पास कर बढाने के सिवा कोइ दूसरा उपाय नहीं।

राजमाता: हां यह सही है। लेकिन धनसंचय के दो उपाय है। खर्चे कम करो और कर बढाओ! मैं इसमें से पहले उपाय में विश्वास रखती हूं!

दिवान: इसमें कोइ शक नहीं राजमाता! आप की सादगी तो हम सबके लिये बडी प्रेरणादायी है। आप की आज्ञा से राज्य ने विशेष तिजोरी कचेरी बनाइ है और एक एक रुपीये का हीसाब रखा जा रहा है।

राजमाता: नगरवासीओं को कोइ तकलीफ तो नहीं?

दिवान: राजमाता! कुछ बहनें आप से मिलने आइ है।

(कुछ बहनें घूंघट डालकर आगे आती है, महाराणी को नमस्कार करती है)

राजमाता: (उनके नमस्कार का प्रतिभाव देते हुए) आओ, बहनें क्या समस्या है आपकी?

एक बहन: राजमाताने घणी खम्मा! बा हमारे विस्तार में पीने का पानी नहीं है। बच्चे बारबार बिमार पड जाते है।

राजमाताः दिवान साहब! हमारी बहनें पानी के लिये दुःखी हो यह मैं नहीं देख सकती हूं।

दिवान: सही है! किन्तु हमारा नगर सागर किनारे पे बसा है। चारों और खारा पानी है। कुएं बावडी से भी मीठा जल नहीं मिलता है। क्या करें?

राजमाता: मेरा ऐसा मत है कि हमें बारिश का एक एक बुंद रोकना चाहीए। हर घर के नीचे बारिश के पानी को संग्रह करने की टंकी बनाइ जानी चाहीए। और एक बडा तालाब भी बनाय जाय ताकि घर आंगन के कुएं भी सजीवन रहे। तालाब बनाने के काम में हमारे श्रमिकों को रोजगारी भी मिलेगी।

दिवान: राजमाता! आप धन्य है! अन्नजल के विषय में एक माता ही सही उपाय ढूंढ सकती है! अब ऐसा ही होगा। हम जल्द से जल्द आप की आजा का अमल करेंगे।

दूसरी बहन: राणीमां, आप महान है। आप के उपकार को हम कभी नहीं भूलेंगे!

राजमाता: (हंसते ह्ए) और यह भी कभी मत भूलना कि पानी की एक एक बूंद बचाना है!

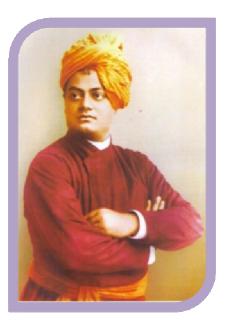
दूसरी बहन: जी राणी मां! (वंदन करती है)

(सभा समाप्त होती है। राजमाता खडी होती है। सभी दरबारी भी खडे होते है। सभी जयकार करते है)

सूत्रधार: और इस तरह राजमाता ने मेरे किनारे बसे लोगों की मीठे पानी की समस्या सुलझाइ। रुपाळी बा बडी हीधार्मिक वृत्ति के थे। माधवपुर में माधवरायजी का मंदिर, पोरबंदर में केदारेश्वर और बहुचर माता जैसे आध्यात्मिक स्थळों का निर्माण भी करवाया! राजमाता के संस्कार और शील राना विकमातजी में भी विद्यमान थे। उनमें वीरता, दक्षता और अध्यात्म का त्रिवेणी संगम था। उन्होंने अंग्रेजों कंपनी के अन्याय विरुद्ध डिरेक्टर कॉर्ट में पत्रव्यवहार करके बंदर पर राज्य का पूर्ण अधिकार प्राप्त किया। जिससे राज्य की आय बढी। पोरबंदर राज्य की मालिकी के 'बार शिंगार, 'कल्याण पाशा, 'महादेव पाशा' और 'दोलत पाशा' नाम के चार जहाज मेरी लहरों पर सफर करते रहे और समृद्धि लाते रहे। साहसी और वीर सागरपुत्रों ने देश-देशावर की यात्रा की। विदेशी व्यापार और मत्स्योद्योग का विकास किया।राणा विकमातजी के सादगीपूर्ण, करकसर युक्त और सुशाशन के कारण पोरबंदर राज्य स्टेट ऑफ ध फर्स्ट क्लास भी बना। राणी मदालसा के पावन चरित्र का अमर बोध याद रखें, एक सद्गुणी माता एक महान पुत्र को न सिर्फ जन्म देती है, परंतु उसे सच्ची जीवनराह भी बताती है!

स्वामी विवेकानंद की पोरबंदर यात्रा

सूत्रधारः पूरब से पच्छम और उत्तर से दख्खन तक फैला हूं आ मैं हूं रत्नाकर सागर! मैंने भारत के कइ महान विभूतिओं के दर्शन किये है। आज भारत के पूर्व तट पर जन्मे एक विश्वविख्यात संन्यासी की बात करना चाहता हूं। आप समझ गये होंगे! जी हां! मैं रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानंद की बात करना चाहता हूं। बात उन दिनों की है, जब परिव्राजक नरेन्द्र पूरे भारत में घूम रहे थे। सन् अठारहसौ इक्यानवें के जनवरी माहमें स्वामीजी पोरबंदर पधारे। कहा जाता है कि संन्यास लेने के बाद स्वामीजी किसी एक जगह ज्यादा से ज्यादा ठहरे थे, तो वह भूमि पोरबंदर की थी! उन दिनों ब्रिटीश सरकारने पोरबंदर राज्य के एडिमिनिस्ट्रेटर के तौर पर शंकर पांडुरंग पंडित को नियुक्त किया था। जो स्वयं वेदशास्त्रों के प्रकांड विद्वान थे।



पोरबंदर स्टेट ने स्वामीजी का बहुत स्वागत किया। उन्हें भोजेश्वर बंगलाँ में ठहराया गया। स्वामीजी यहां पर महीनों तक रुके और आसपास के विस्तार की यात्रा भी की। आइए एक प्रखर राष्ट्रभक्त संन्यासी और विद्वान पंडित एडमिनिस्ट्रेटर का संवाद स्नते है!

(एडमिनिस्ट्रेटर शंकर पांडुरंग का निवासस्थान। सोफे पर स्वामीजी विराजमान है। सामने कुर्सी पर एडमिनिस्ट्रेटर और कुछ विद्वान और युवा भाइ-बहन बैठे है। एक सेवक सन्मान शॉल और प्ष्पहार लेकर प्रवेश करता है। एडमिनिस्ट्रेटर स्वामीजी का सन्मान करते है।)

शंकर पांडुरंग: स्वामीजी, मैं सभी पोरबंदर नगरवासीओं की और से आपका स्वागत करता हूं। स्वामी विवेकानंद: पंडितजी! यह तो श्रीकृष्ण-सुदामा की भूमि है! यहां के कणकण में दिव्यता का स्पंदन है! वास्तवमें मैं यहां आकर बड़े आनंद का अनुभव कर रहा हूं! नांवमें मेरे साथ बैठे एक ब्राहमण ने मुझे स्कंदपुराण के सुदामा माहात्म्य का एक श्लोक सुनाया था। (क्षणभर याद करते हुए) हां याद आ गया!

लवणोदधिवेलायां सुदाम्नः पुर पर्वतः अस्मावत्यास्तदस्थं ते केदार योऽर्चन्नरः।

रत्नाकर सागर और अस्मावती के किनारे पर बसे इस नगर का प्राचीन नाम पौरवेलाकुल है। यहीं पर श्रीकृष्ण के परम सखा महान विद्वान और निर्लोभी भूदेव सुदामाजी निवास करते थे। यह तो केदारेश्वर समान पावन भूमि है! शंकर पांडुरंग: स्वामीजी! हमारा पोरबंदर एक छोटा सा नगर है। आप को निवास या भोजन की कोइ अस्विधा तो नहीं?

स्वामीजी: अरे यह क्या पूछ रहे है? आप की आगता-स्वागता में भी कोइ कमी हो सकती है क्या? (हंसते हुए) उलटा मुझे यह डर लग रहा है कि यह भव्य निवास और स्वादिष्ट भोजन कहीं मुझे यहीं न रोक दे! फिर मेरे परिव्राजक व्रत का क्या होगा? (सब लोग हंसते है)

शंकर पांडुरंग: स्वामीजी! आपकी विद्वता और शील की चर्चा पूरे नगर में हो रही है। आज कुछ विद्वान मित्र और युवा आप से मिलने आ गये है। कृपया हम सब का मार्गदर्शन करें!

स्वामीजी: आइए, आँज प्रवचन के बजाय संवाद करें! मेरे युवा दोस्त कुछ पूछना चाहते है तो अवश्य पूछें।

एक युवा: हम सुनते आये है कि प्राचीन काल में भारत बडा ही समृद्ध और सुशिक्षित देश था। लेकिन जब आज हम अपने आसपास गरीबी और निरक्षरता देखते है तो बडी निराशा होती है। और य भी सवाल उठता है कि ऋषिओं और संतो-सम्राटों के देश का हाल ऐसा क्युं हो गया?



स्वामीजी: वाह! तुमने बहुत ही अच्छा सवाल किया है। तुम जानते हो? भारत नाम का क्या रहस्य है? 'भासि रत: इति भारत:' जो जान-विज्ञान के प्रकाश से परिपुर्ण है वही भारत है! जान ही सर्व संपदा का रहस्य है। सदीओं की गुलामीने हमारी इस ज्ञानयात्रा को रोक दिया है। वही हमारी बदहाली का कारण है।

दूसरा युवा: क्या भारत का फिरसे महान होना संभव है?

स्वामीजीः भारत फिरसे उठेगा! विज्ञान और अध्यातम का समायोजन करके! और यह कार्य हम सब युवाओं को करना है!

तीसरा युवाः लेकिन इस में हम क्या कर सकते है? हमारे पास न कोइ धन न कोइ विशेष शिक्षा है!

स्वामीजीः त्मने कठोपनिषद पढा है?

तीसरा युवाः हां स्वामीजी। पाठशाला में गुरुजी ने एकबार यम और निचकेता का संवाद पढाया था।

स्वामीजीः 'युवास्यात्साधु: आशिष्ठो हिढण्ठो बिलण्ठ:'यह मंत्र याद करो। अपने तनमन को सात्त्विकता, संयम, सहनशीलता और बाहुबलसे भर दो! एक एक युवा निचकेता बने। ऐसे सौ निचकेता मिल जाय तो भारत तो क्या विश्व का आध्यात्मिक नकशा बदल शकता है!

(सब युवा एक दूसरे के सामने देखने लगे। स्वामीजी समज जाते है कि इन को समजने में दिक्कत हो रही है)

स्वामीजी: आओ! मैं तुम्हें पंचतंत्र की एक कहानी सुनाता हूं! एक बार जंगल में शेर का बच्चा अपने परिवार से बिछड जाता है। वह बेचारा छोटा बच्चा अपनी मां को ढूंढ रहा था, तभी एक भेड का समूह वहां से गुजरता है। शेर का बच्चा इन के साथ चल देता है। धीरे धीरे वह भेड के इस बच्चों के साथ बढ़ने लगता है। उसका खानपान और बोलचाल भी भेड जैसी हो जाती है। दो सालमें तो उसका कद और देखाव युवा शेर जैसा हो गया। लेकिन उसका स्वभाव तो भेड जैसा ही रहा!

चौथा युवा: फिर क्या हुआ? वह कभी शेरों के समूह में वापस आया कि नहीं?

स्वामीजी: मेरा मित्र थोडा अधीर है! कोइ बात नहीं वैसे जिज्ञासा और उतावलापन एक दूसरे के साथी है! कुछ हद तक यह जरुरी भी। आइए अब आगे सूनें। एक बार वह शेर का बच्चाभेडों के साथ जंगल में घूम रहा था। तभी वहां एक बडा शेर आ पहूंचा। शेर की दहाड से भेड भागने लगते है। भेड का साथीयुवा शेर भी भागने लगा! शिकारी शेर को बडा आश्चर्य हुआ। उसने इसे पकड लिया। जवान शेर भेड की तरह बें वें करते हुए छोदने की बिनति करता रहा। बडे शेर ने बहुत समजाया लेकिन युवा शेर अपनी भाषा भूल चूका था! फिर बडे शेर को एक विचार आता है। वह उसे पास के कुंए के पास ले जाता है। जहां पानीमें उसे अपना प्रतिबिंब दिखाता है। युवा शेर अपना मुंह देखता हैऔर पास खडे वनराज का भी। कुछ क्षण बाद उसे अपने स्वरूप का भान होता है। वह दहाड उठता है। बदे शेर को वह ललकारता है। क्युं कि अब वह भेड नहीं रहा था! इति वार्ता! अब समज में आया दोस्तो?

(सब युवाओं के कहेरे पर प्रसन्नता का प्रकाश फैल जाता है)

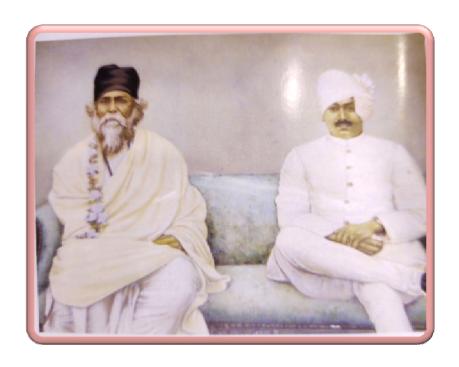
पहला युवाः जी स्वामीजी! अब पूरा समजमें आ गया!

स्वामीजी: *उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत!* हे युवा उठो, अज्ञानरूपी अंधकार के अंचल को उतार फेंको और सत्पुरुषों से ज्ञान प्राप्त करो! तुम सब ही तो भारत का भविष्य हो!

(सब युवा उठ जाते है, स्वामीजी के चरणों में वंदना करते है। स्वामीजी उन्हें आशिष देते है)

सूत्रधार: ऐसे कइ संत महात्मा मेरे किनारे आते रहे जाते रहे और मानवता का अमर संगीत सुनाते रहे! कहते है कि स्वामी विवेकानंद को अमरिका सर्वधर्म परिषद में जाने की प्रेरणा भी शंकर पांडुरंग पंडितजी ने दी थी। पोरबंदर की धरतीमें ऐसे महान विद्वान व्यवस्थापक भी विचरे है, यह गौरव की बात है! स्वामी विवेकानंद जहां ठहरे थे वह भोजेश्वर बंगलो आज विवेकानंद मेमोरियल बन चूका है और स्वामीजी के अमर बोध याद दिला रहा है!

जेठवा वंश के अंतिम शीलवान राणा नटवरसिंहजी द्वारा कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुरका स्वागतोत्सव



सूत्रधार:पोरबंदर के अंतिम जेठवा राजा हुए श्री नटवरसिंहजी! यहां पर भी एक और पावन मातापिता का नाम स्मरणीय है! महाराणा भावसिंहजी और राजमाता रामबा! बीसमी सदीके उषाकाल में जिन्होंने पोरबंदर की बागडौर सम्भाली ऐसे राणा भावसिंहजी बहुत नेकदिल मानवी थे। राणासाहबने जामनगर राज्य के साथ चल रही शत्रुता को समाप्त कीया। राणा भावसिंहजी ने महा-अकाल और प्लेग की महामारी के कठीन समय में मानव और पशुओं का बडे ही उदार दिल से पालन-पोषण और संरक्षण कीया। इनके समय में बडे ही खूबसुरत स्थापत्यों का निर्माण हुआ। दिरया महल के नाम से जाने वाला राजमहालय आज आर।जी।टी। कॉलेज के नाम से जाना जाता है।

भाविसहिजी ने एक चिडियाघर भी बनाया था। व्यापारीओं को लॉन देने के लिए राणासाहबने लॉन ऑफिस भी बनाया था! उन्हों ने कला और साहीत्य को भी उत्तेजन दिया। ईसी कालखंड में भाविसहिजी होस्पिटल, भाविसहिजी हाइस्कुल एवं बालुबा कन्या विद्यालय जैसे आरोग्य और शिक्षा के सेवा-केन्द्रो का निर्माण हुआ था।राणानटवरिसहिजी जब बालवय के थे तब राणा भाविसहिजी का देहांत हुआ। राजमाता रामबा ने राजकुमार को अच्छी शिक्षा और संस्कार का प्रबंधन कीया। जिससे पोरबंदर को एक आदर्श राजवी प्राप्त हुआ! उनका व्यक्तित्व बहु-आयामी था। लेकिन आज मैं एक और घटना तुम्हें सुनाना चाहता हूं। क्या आप जानते है? कविवर रिबन्द्रनाथ ठाकुर का पोरबंदर पधारे थे? और लोकगीत और रास देखकर बहुत प्रभावित हुए थे? आइए करीब सौ साल पहले केज्ञात इतिहास की उस रोमांचक घडी का अनुसंधान करे!

(राज महल का प्रांगण। विशाळ शिमयाने में स्टेज पर राणासाहब, गुरुवर और दुसरे विरष्ठ बिराजमान है। सामने दर्शक बैठे है। बीच में नृत्य के लिये एक छोटा सा स्टेज बनाया गया है। गुरुवर को राणासाहब फुलहार और शाल से स्वागत करते है। फिर भजनमंडली द्वारा भजन और रासोत्सव का प्रारंभ होता है।) (प्रारंभ में गणेश वंदना होती है। बाद में यह प्रख्यात दोहे के साथ भजन शुरु होता है)

"કાઠીયાવાડ માં તુ કોક દિ ભૂલો પડ ને ભગવાન, તું થા ને મારો મોંઘેરો મેમાન, તને સ્વર્ગ રે ભૂલાવું શામળા"

હાં... મણિયારો તે હલુ હલુ થઈ વિયો રે. મણિયારો તે હલુ હલુ થઈ વિયો... હે મુઝા દલડાં ઉદાસીમાં હોય રે.. છેલો મુઝો હાલારી મણિયારો... કે ભાઈ મુઝો પરદેશી મણિયારો...



मेर रास मंडली द्वारा शौर्यपूर्ण रास एवं तलवारबाजी का प्रदर्शन होता है। बाद में महाराणा के अनुरोध पर गुरुवर ठाकुर संक्षिप्त वक्तव्य देते है।) गुरुवर रिवन्द्रनाथ ठाकुर: महामहीम राणासाहब और मेरे प्यारे भाइ-बहनों! आज का दिन मेरे लिये खास है। आज मैं जिस भूमि पे बैठा हूं वह शूरा, संत, सती और सेवकों पावन भूमि है! यहां एक और रत्नाकर सागर है, तो दूसरी और खूबसूरत वनांचल है! किव और सर्जक को प्रेरणा देने के लिये पूरी नैसर्गिक और आध्यात्मिक संपदा यहां विद्यमान है! और आज मैंने आप लोगों की महमानगित का दर्शन किया। आप की लोककला का आचमन लिया। यहां के युवाओं के बाजुओं में ऊर्जा का उमंग भी देखा! यह तो नटवर नागर की लीलाभूमि है! सुदामा के निर्दोष सख्य की भूमि है! और अंग्रेजों के अन्याय के खिलाफ दक्षिण आफ्रिका में अहिंसक जंग जीतने वाले और अब मातृभूमि को मुक्त करने का जिसने प्रण लिया है वह मोहनदास गांधी भी इसी भूमि की संतान है! और क्या कहूं? यह तो 'मोहन से मोहन' की अक्षुण्ण परंपरा की महाभूमि है! मैं इस भूमि को वंदन करता हूं! आप सभी और विशेषत: राणासाहब का विशेष कृतज्ञ हूं!





स्वातंत्र्य संग्राम में पोरबंदर का योगदान: छगन खेराज वर्मा

सूत्रधार: पोरबंदर को सब लोग महात्मा गांधीजी की जन्मभूमि के बारे में जानते है। बीसमी सदी का पूर्वार्ध महात्मा गांधीजी के नाम रहा, इस बात में कोइ संशय नहीं। लेकिन मां भारती के इस स्वातंत्र्य संग्राम में भी पोरबंदर के वीरों ने अहम भूमिका निभाइ है। जिनके पूण्यस्मरण के बिना यह बात अधूरी ही रह जायेगी. गांधीजी की अहिंसक लडाइ में पोरबंदर के मथुरादास भूप्ता, विजयशंकर वासु (विजयगुप्त मौर्य), विजयदासजी महंत, वालजीभाइ सोलंकी, गुलाबदास ब्रोकर, नगीनदास मोदी, दयाळजी विढया, भूजंगी छाया के डाह्याभाइ पिंडया उपरांत अनेक नामीअनामी भाइ बहनोंने हिस्सा लिया। मथुरादास भूप्ता ने खादीभंडार के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन भी चलाया और महंतजीने तो जुनागढ के नवाब की पाकिस्तान में सिम्मिलित होने के विरुद्ध चलाइ गयी आरझी हुकूमत के स्वातंत्र्य संग्राम में भी बडा योगदान दिया था! लेकिन कम प्रचलित दो नाम विशेषत: स्मरणीय है; एक, क्रांतिगुरु श्यामजी कृष्णवर्मा के साथी छगन खेराज वर्मा और आझाद हिन्द फौज के स्थापक सुभाषचंद्र बोझ के साथी लक्ष्मीदास दाणी! आइए, छगन खेराज वर्मा को इस प्रसंग से श्रद्धांजिल दें!

(गद्दर पार्टि के केनेडा में खुफिया मुख्यालय का दृश्य. जिस में क्रांतिगुरु श्यामजी कृष्णवर्मा और साथी भारत के क्रांतिकारीओं को प्रोत्साहित करने की योजना बना रहे है)

श्यामजी कृष्णवर्मा: साथीओं! आज मां भारती की आहट सुनाइ दे रही है! मां हमें पुकार पुकार कर कह रही है कि मुझे इन विदेशी ताकतों से छुडाओ! क्या हम ऐसे ही बैठे रहेंगे? हमारा कोइ कर्तव्य नहीं?

छगन वर्मा: क्रांतिगुरु! हमारे खून का कतरा कतरा हम कुरबान कर देंगे! आप बताइए, हमें क्या करना है। आप की एक आवाज पे हम सब कुछ मां भोम पे न्योच्छावर कर देंगे। (सभी साथी हाथ उंचे करके "हां हम सब कुछ न्योछावर कर देंगे" का घोष पुनरावर्तित करते है।)

श्यामजी कृष्णवर्मा: हमारे कइ साथी भारत की भूमि पर लड रहे है। हम यहां बैठकर उनको साथ देंगे। जो भी क्रांतिकारी यरोप, केनेडा अथवा अमरिका में आयेगा उसकी देखभाल करेंगे। उनकी रक्षा करेंगे। एक और जरुरी बत यह है कि अभी भी भारत की आम जनता इस संग्राम में जुडी नहीं है। जनमन में जब तक स्वातंत्र्य की आह नहीं उठेगी तब तक अंग्रेज सल्तनत की नींव नहीं हिलेगी!

एक क्रांतिकारी: लेकिन यह सब कैसे होगा?

श्यामजी कृष्णवर्मा: हम जनचेतना जगाएंगे! हम क्रांति की आग एक एक युवा तक पहुंचायेंगे। भगतिसंह, सुखदेव और राज्यगुरु की शहादत की वीरगाथा हर कोइ युवा पढेगा। आप जानते हैं? कोइ भी क्रांति के यह सब से पहला और सब से बडा काम है।

दूसरा क्रांतिकारी: लेकिन हम यहां केनेडा में बैठे बैठे यह काम कैसे करेंगे?

श्यामजी कृष्णवर्मा: हम अपना अखबार चलायेंगे. अंग्रेजों के काले कारनामे इसमें छपेंगे।

छगन वर्मा: लेकिन हमारी मातृभूमि कई प्रदेशों में और अनेक भाषाओं मे बंटी हुइ है। ज्यादातर लोग तो अंग्रेजी भाषा जानते ही नहीं!

श्यामजी कृष्णवर्मा: तुम ठीक कहते हो छगनभाइ! हम अनेक प्रादेशिक भाषाओंमें ईस का प्रकाशन करेंगे। हमारे सब साथी अपनी अपनी भाषाओं में काम करेंगे!

छगन वर्मा: हां! और मैं गदर के मुखपत्र का गुजराती अनुवाद करके गुजरात के हर गांव हर नगर तक क्रांतिकी आह्लेक पहुंचाउंगा! (सब तालध्विन से छगन वर्मा की बात का समर्थन करते है।)

श्यामजी कृष्णवर्मा: शाबाश! छगनभाइ! और हिन्दी में कौन लिखेगा? (एक और क्रांतिकारी हाथ उंचा करता है।)

बस, ऐसे ही हम भारत के कोने कोने तक अपनी आवाज पहुंचायेंगे! (सब खडे हो जाते है। एक साथ वंदे मातरम् और इंकिलाब झिंदाबाद के नारे लगाते है!)

सूत्रधार: और इस तरह क्रांतिगुरु श्यामजी कृष्णवर्मा ने विदेश की भूमि से क्रांति की चिनगारी जलाई। उन्होंने पत्रकारत्व के माध्यम से राष्ट्रभक्ति की आह्लेक जगाई. पोरबंदर के सपूत छगन वर्मा ने गुजराती में क्रांति का संदेश दिया। अपनी पहचान छिपाने के लिये उन्होंने अपना नाम बदलकर हुसेन रहीम रखा। और केनेडा के इमिग्रेशन अधिकारी होपिकन्स की हत्या के आरोप में उन्नीससौ पंद्रह में उनको फांसी पे चढाया गया। और ऐसे एक क्रांतिकारी सितारा मेरी लहरों के भीतर समा गया! वंदे मातरम्!)

नेताजी सुभाषचन्द्र बोझ के साथी लक्ष्मीदास दाणी



सूत्रधार: मैं सागर! वीरों का चाहक! मेरी लहरों पर जीवन और मौत का खेल खेलती नावों पर चट्टान की तरह खंडे रहने वाले सागरपुत्रों का मैं चाहक हूं! पोरबंदर के राणावाव तहसील का एक छोटा सा गांव है, राणा खीरसरा! वहां जन्मे लक्ष्मीदास दाणी कमाल के इन्सान थे। युवा के तीन महा आदर्श 'आशिष्ठो दृढिष्ठो बिलष्ट:' के मूर्तिमंत स्वरूप! लक्ष्मीदास वैसे तो एक व्यापारी के पुत्र थे, किन्तु उनकी रुचि मल्लकुस्ती में थी! क्या आप जानते है? यहां के लोग उनको 'वीर दुर्गादास' कहकर पुकारते थे! अपने शारीरिक कौशल्य को उन्होंने देशभक्ति में प्रवाहित किया! आईए, पोरबंदर के उस अखाडे में चलते हैं जहां हमारे वीर लक्ष्मीदास कुस्ती में रत है! (अखाडे का दृश्य। कुछ किशोर-युवा मल्लकुस्ती खेल रहे है। इनके बीच लक्ष्मीदास सबको दांवपेच शिखा रहे है। एक युवा किसी साथी को पैर से पकडकर गिराता है।)

लक्ष्मीदास: अरे गुलाबदास! ऐसे तुम इतना जल्दी गिर जाओगे को कैसे चलेगा? आओ मैं तुम्हें शीखाता हूं! (लक्ष्मीदास खडे होते है, गुलाबदास उनका पैर पकड लेते है। तब घूमकर लक्ष्मीदस उनसे अपना पैर छूडवा लेते है, उसे पीठ से पकड लेते है और उन को चीत कर देते है। अब ऐसे ही गुलाबदास फिर उसी साथी के साथ वही दांव का प्रयोग करके उसे परास्त करते है। सब इस दांवपेच का आनंद उठाते हुए करतलध्विन से शाबाशी देते है!)

लक्ष्मीदास: चलो! दोस्तों आज हमारा आज का खेल यहीं खत्म करते है! लेकिन घर जाकर आंगन में अभ्यास करना मत भूलना! (सब चलने लगते है, तभी लक्ष्मीदास कहते है) अरे गुलाबदास, तुम रुक जाओ! कुछ जरुरी बात करना है।

गुलाबदास: (पास आते हुए) क्या बात है? मास्टरजी, आप कुछ कहना चाहते है?

लक्ष्मीदास: दोस्त! (हसते हुए) मैं यह दांवपेंच क्या तुम लोगों को ऐसे ही शीखाता हूं?

गुलाबदास: मास्टरजी! मैं आपकी बात समजा नहीं!

लक्ष्मीदास: तुम ही बताओ! (अपने बाहुओं को दिखाते हुए) इन बाजुओंमें जो दमखम है, उसके उपर किसका हक है?

गुलाबदास: पहलीयां मत बुझाओ मास्टरजी!

लक्ष्मीदास: तुम बहुत समजदार हो! मैं अच्छी तरह से जानता हूं की मेरी बात का मर्म जान चूके हो! फिर भी मेरे मुंह से सुनना चाहते हो! तो सुनो! अभी थोडे दिनों पर सुरत में कोंग्रेस का महा-अधिवेशन होनेवाला है। मेरे साथ चलोगे? वहां जाकर हम लोग नेताजी सुभाषबाबु से मिलेंगे! उन्हें हमारे जैसे युवाओं की जरुरत है। सुना है कि नेताजी इन सविनय कानून भंग के बजाय क्रांति की राह पर चलना पसंद करते है।

गुलाबदास: वैसे मैं गांधीजी के बताये रास्ते पर चलने को शपथ ले चूका हूं! लेकिन मैं आप के साथ जरुर चलुंगा। क्युंकि हमारी दोनों की मंझील एक है, रास्ता भले अलग हो!

(दोनों एक-दूसरे को गले मिलते है! पार्श्वभूमि में 'वंदे मातरम्' और 'इन्किलाब झिंदाबाद' के नारे लगते है।) सूत्रधार: तो ऐसे नेताजी को मिले एक और वीर साथी. कहा जाता है कि लक्ष्मीदास की राष्ट्रभक्ति और वीरता को देखकर सुभाषबाबु ने उन्हें अपना अंगरक्षक बनाया था! आइए मेरी लहरों पे अंकित पोरबंदर की एक और गौरवपूर्ण घटना की आप को सैर कराता हूं!



(सागरखेडु – खारवा ज्ञातिका मढी-मुख्यालयका दृश्य. उंची गद्दी पे वाणोट बैठे है। उनके आसपास नीचे गद्दी पे इस समाज के नौ डायरा के पटेल बैठे है। तभी सभा में लक्ष्मीदास और उनके एक साथी प्रवेश करते है.) वणोट: अरे! लक्ष्मीदासभाइ! आइए, आप का स्वागत है. बहुत दिनों के बाद आप दीखे! सुना था कि आप दूर कहीं प्रवास में थे!

लक्ष्मीदासभाइ: (आकर वाणोट को गले मिलते हैं) मैं आज आप सभी से कुछ मांगने आया हूं! वाणोट: अरे बैठीये तो सही! जलपान किजीये। (वणोट सामने खडे युवा को इशारा करते है. वह पानी का कळश लेकर आता है. दोनों पानी पीकर सामने बैठ जाते हैं) मांग लिजीये! क्यां मांगने आये हैं? मुझे पता है कि आप जरुर कोइ देशभक्ति का संदेश लाये है!

लक्ष्मीदास: हां! ठीक समजे आप! (आसपास बैठे लोगों को देखकर विचार में पड जाते है)

वाणोट: चिंता मत किजीये. यह हमारे डायरे के नौ पटेल है। यह सब हमारे अत्यंत विश्वासु साथी और हम सब की तरह पूरे देशभक्त ही है! लक्ष्मीदास: (सबको हाथ जोडकर प्रणाम करते हुए) बात ऐसी है कि मैं नेताजी सुभाषबाबु के साथ हूं। नेताजी आजकल विदेश में है। हमारी आझाद हिन्द फौज रंगून तक पहुंच गइ है. ईश्वर की कृपा हुइ तो हम जल्दी स्वदेश की भूमि पर अंग्रेजों के साथ भी लडेंगे और मांभोम को आझाद करेंगे।

वाणोट: यह तो बहुत अच्छी बात है। बताइए, हम देश की क्या सेवा कर सकते है?

लक्ष्मीदास: रंगून में आझाद हिन्द फौज को खाने के लिये अनाज की किल्लत खडी हुई है। हमें बहुत जल्द खुराक पहुंचाना होगा। आप जानते है कि अंग्रेज सल्तनत की गश्त बडी सख्त है। जमीनी रास्ते से अनाज पहुंच नहीं पायेगा. इस हालात में ज्यादा देरी हुइ तो हमारे सैनिक भूख से मर जायेंगे! क्या हमारे सागरपुत्र इसमें कोइ मदद करेंगे?

(विचारग्रस्त वाणोट और उनके साथी एक दूसरे के सामने देखते है)

लक्ष्मीदास: लेकिन मैं बता दूं कि इस में बडा खतरा है. अंग्रेजी जहाज सागर में भी पहरा लगा रहे है। यदि पकडे गये तो मौत का खतरा है!

वाणोट: क्या भाइओं क्या विचार है?

एक पटेल: इसमें सोचने की कोइ बात नहीं! हम दिनरात खतरों से खेलते है। सागरदेवता की तुफानी लहरों पर खेलते रहते है! और यह तो मां भोम पे शहीद होने की बात है! हमारे जवान यह काम करेंगे! क्युं भाइओं? (सब पटेल खडे हो जाते है। और एक साथ मिलकर कहते है "हां हम सब आप के साथ है")

वाणोट: (गद्दी से खडे हो जाते है, खुशी से भरे लक्ष्मीदास भी खडे हो जाते है) शाबाश! मेरे जवान साथीओं! मुझे तुम सब पर गर्व है! (लक्ष्मीदास तरफ मुडकर) देखा लक्ष्मीदासभाइ! हमारे सागरपुत्रों का जुनून? बस आप जल्द से जल्द अनाज इकट्ठा किजीये। जहाज भर दिजीये। फिर हम करेंगे अपना काम!

(सब साथ मिलकर नारे लगाते है, 'वंदे मातरम्' 'नेताजी सुभाष अमर रहो', 'आझाद हिन्द फौज अमर रहो') सूत्रधार: और इस तरह यहां के वीर सागरपुत्रों ने तीन जहाज भरकर अनाज रंगून पहुंचाया और आझाद हिन्द फौज के सेनानीओं को भूख से बचाया! जब अंग्रेजों की नजरकैद से नेताजी पठान का छद्मवेश लेकर पलायन हुए तब लक्ष्मीदास दाणी उनके साथ थे और उन्हें सही-सलामत काबुल पहुंचाकर वापस लौटे थे! तब अंग्रेजों ने उन्हें पकड लिया और बडी शारीरिक यातनाएं भी दी थी। लक्ष्मीदास ने 'सुभाष जीवनी' नाम की एक छोटी सी किताब भी लिखी थी! मैं तो शौर्य और बलिदान की ऐसी अनेक घटनाओं का मौन साक्षी हूं। लेकिन आज फिर उन्हें याद कर रहा हूं ताकि हमारे बच्चें यह न भूलें कि जिस स्वंत्र भारत में हम सांस ले रहे है, उसे बनाने में कई नामी-अनामी देशभक्तों की कुरबानी जुडी है! वंदे मातरम्!

महात्मा गांधीजी के समक्ष शेठ नानजी कालीदास द्वारा कीर्तिमंदिर निर्माण का प्रस्ताव

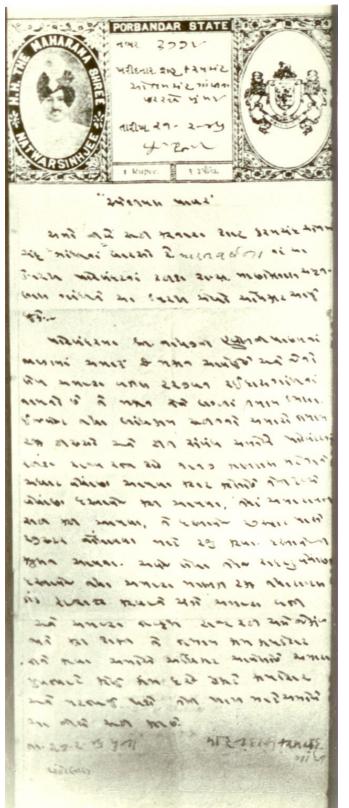


सूत्रधार: अब हम पोरबंदर की गाथा के अंतिम बिंदु पर पहूंचे है। 'मुरलीमनोहर मोहन' से प्रारंभ हुइ यात्रा 'मोहनदास गांधी' पर समाप्त हो रही है! करमचंद गांधी और पुतलीबाइ की वात्सल्य कुंजमें उनका जन्म दो अक्तुबर उन्नीसौ उनहत्तर में हुआ। बालगांधी सात वर्ष की आयु तक यहां खेले। उसके बाद उनकी शिक्षा राजकोट में हुइ। तेरह वर्ष की आयु में उनका विवाह कस्तुरबा से यहीं हुआ! बापु के जन्म स्थल के पास ही कस्तुरबा का भी घर है। महात्मा गांधीजी के जीवन के बारे में मैं क्या क्या कहूं और क्या न कहूं? बस इतना ही कह सकता हूं कि सत्य और अहिंसा के सनातन मानमूल्यों को उन्होंने अपने जीवनमें अपनाया, इतना ही नहीं इसे सिद्ध कर बताया! गांधीजी की पूण्यस्मृति को जीवंत रखने का महाकार्य यहीं के सपूत राजरत्न शेठ श्री नानजी कालीदास ने किया! आइए इसी घटना से इतिहास का दौर हाथ में लेते है। यह उन्नीससो पैतालीस की बात है। जब गांधीजी आगाखान महल की नजरकैद से रिहा हुए। तब नानजीशेठने उन्हें कुछ समय पंचगीनी में बिताने के लिये न्योता दिया। वहीं पर गांधी मेमोरियल के बारे में नानजी शेठ और गांधीजी बात हुइ।

(पंचगीनी निवास के कमरे का दृश्य। गद्दी पे बापु बैठे है। सामने शेठ नानजी कालीदास और पोरबंदर के दो सद्गृहस्थ बैठे है)

नानजी शेठ: बापु, आप की तबियत कैसी है?

गांधीजी: मुझे क्या होना था? मैं तो जैसा आगाखान महल में था वैसा ही यहां हूं! हां आप के सेवक हमारा अच्छा ख्याल रखते है! (हंसते हुए) इतना कि कभी कभी डर लगता है कि यह लोग कहीं मुझे शेठ न बना दे! (सब हंसते है।)



नानजी शेठ: आपकी सेहत पूरे देश की खुशहाली है, बापु! सेवा का एक छोटा अवसर मिला यही हमारा सौभाग्य है!

गांधीजी: आपने चीठ्ठी में लिखा था कि पोरबंदर के महाराणा साहब और वहां की जनता का कोइ संदेश लेकर आप आ रहे है।

नानजी शेठ: जी बापु। पोरबंदर की जनता, महाराणा साहब और हम चाहते है कि आप के जन्मस्थल पर एक स्मृतिमंदिर बनें। इसके लिये आपकी संमति चाहीए।

गांधीजी: इसकी क्या आवश्यकता है? वैसे भी मैं तो पूरे विश्व को अपना घर-परिवार मानता हूं! (स्मित के साथ बापु सब के सामने देखते है।) नानजी शेठ: यह आपकी महानता है! लेकिन पोरबंदर की भूमि पर आपका प्रागट्य हुआ है, इस बात का गौरव लेने का अधिकार हमें भी तो है! और इस तरह आपकी स्मृति बनी रहेगी। पूरे विश्व के लोग वहीं से सत्य और अहिंसा का संदेश लेकर जायेंगे!

गांधीजी: लेकिन मैं नहीं चाहता कि वहां कोइ बडा खर्चीला स्मृति-मंदिर बने। वैसे भी मैं तो एक आम इन्सान हूं, जो आज आपका महेमान हूं! (बापु हंसते है)

नानजी शेठ: यह स्मृति-स्थल आप के मार्गदर्शन के अनुसार बनेगा। बस हमें आपकी अनुमति दिजीये।

गांधीजी: ठीक है। यदि आप सब की मरजी है तो मैं आपकी बात नहीं टाल सकता।

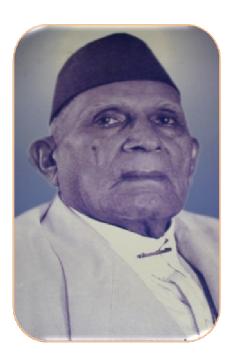
नानजी शेठ: (साथीओं के सामने देखकर प्रसन्न होते हुए) बापु, आपने हमारा मान रखा! इस के लिये हम सभी पोरबंदरवासी आप के ऋणी है! गांधीजी: किन्तु मेरी भी कुछ शर्ते हैं। (नानजी शेठ और साथी विचारमें पड जाते है)

गांधीजी: (हंसते हुए) आप ज्यादा चिंता मत करें! मैं सिर्फ इतना चाहता हूं कि वह स्थल पर कोइ कर्मकांड या पूजापाठ न हो। मेरी कोइ मूर्ति भी न बनें। और उस के स्थापत्य में सर्व धर्म समभाव का फलसूफा हो!

नानजी शेठ: ऐसा ही होगा बापु! हमने तो इस का नाम भी सोच रखा है! कीर्तिमंदिर!

गांधीजी: हां लेकिन यह मेरी व्यक्तिगत कीर्ति का नहीं परंतु सत्य और अहिंसा की कीर्ति का मंदिर हो!

सूत्रधार: इस तरह महात्मा गांधीजी की अनुमित लेकर नानजी शेठ ने मात्र दो वर्षों मे पांच लाख रुपीये की लागत से कीर्तिमंदिर बनवाया। जिस के स्थापत्य में विश्व के छ प्रमुख धर्मों के निशान है।



इस की उंचाइ भी बापु की आयु को ध्यान में लेते हुए उन्यासी फीट की रखी गइ है। यहां पर कोइ मूर्ति रखने के बजाय 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश' को अनुसरते हुए एक खुल्ली किताब के रूप मेंबापु और कस्तुरबा के दो चित्र रखे गये है। जहां हर साल देश विदेश के सेंकडो यात्री आते है और गांधीमूल्यों का जीवनपाथेय लेकर धन्य होते है।

(अब नेपथ्य पर द्रश्य श्राव्य माध्यम से पोरबंदर के प्रमुख स्थल और जानेमाने लोग के दृश्य दिखाये जायें, जिसके साथ सूत्रधार अपनी बात कहेंगे)

यहां पर एक लोकोक्ति प्रचलित है... कहते है कि पोरबंदर की तीन विशेषताएं है, 'राणो, पाणो और भाणो"! राणा मतलब यहां के महान साशक, पाणो अर्थात् यहां से मिलने वाला चूनाका पथ्थर और भाणजी लवजी घीवाला! चूने के पथ्थर आधारित सिमेन्ट और रसायण उद्योगोंने न सिर्फ पोरबंदर परंतु भारत की विकासयात्रा में योगदान दिया है।मत्स्योद्योग द्वारा हजारों लोगों को आजिविका के साथ निकास व्यापार बढाया है।इतना ही नहीं, यहां पर जयकृष्ण इन्द्रजी जैसे वनस्पति शास्त्री, ध सिन्धिया स्टीम नेविगेशन कंपनी के स्थापक और भारतीय जहाजगानी के पिता नरोत्तम मोरारजी, देना बेंक के जनक देवकरण नानजी, आर्यकन्या गुरुकुल के स्थापक नानजी कालिदास, इतिहासकार जगजीवन पाठक,पृष्टिमार्गीय वैष्णव संप्रदाय के भारतख्यात हार्मोनियमवादक गो।श्री द्वारकेश लालजी और उनके पुत्र गो।श्री रसिकरायजी, सुदामा गुरुद्वार के स्थापक स्वामी महेश्वरानंदजी, योगराज त्रिकमजी बापु,श्रीमन्नथुराम शर्मा के साधक संस्कारमूर्ति गोविंदजी लाखाणी, शिक्षाविद मणिभाइ वोरा, लोककलाकार मेरुभा गढवी,वार्ताकार पद्मश्री गुलाबदास ब्रोकर,निसर्गप्रेमी विजयगुप्त मौर्य, किव रितलाल छायाऔर देवजी मोढा!

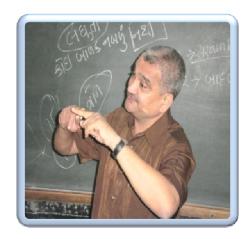




आइए,

इस स्मृति यात्रा को अविरत बनायें रखें! संस्कृति के इस गौरव गान को गाते रहें! मां भारती के मानबिंदु समान इस नगर को, इस भूमि को शांत, स्वच्छ और समृद्ध बनाये रखने का उद्यम करें!

जय जय गरवी गुजरात! वंदे मातरम्!



अशोक शर्मा भा.प्र.से.

श्री अशोक शर्मा डेरी टेकनोलोजी एवं व्यवस्थापन विद्या के अनुस्नातक है। चार साल की संशोधन एवं अध्यापन के उपरांत पीछले ढाइ दशक से प्रसाशनिक सेवामें कार्यरत है। सोमनाथ ट्रस्ट के सचिव के स्वरूप में उन्होंने तीर्थधाम के विकास में रचनात्मक योगदान कीया है। तीर्थ और यात्री सुविधा के विकास के अतिरिक्त प्रभास की बहूंमूल्य आध्यात्मिक परंपराओं को समेटकर उन्होंने 'जय सोमनाथ जय गिरनार' पर्यावरणीय नाट्यकृतिका सर्जन कीया है। भारतीय जीवनमूल्यों के प्रति उनकी आस्था है। श्रुति, दर्शन, ईतिहास एवं मध्ययुगीन भक्ति साहीत्य के अपने अभ्यास के बलबूते पर सामान्य मानवी की जीवन-आस्था और राष्ट्रीय चारित्र्य को बढाने के लिए पीछले दो दसक से प्रसार माध्यमों में लिखते रहे है। लेखक ने वेदांत, योग, रामायण, श्रीमद्भागवत और श्रीमद्भगवद्गीता परक पंद्रह जितने ग्रंथों का सर्जन कीया है।

'मोहन से मोहन' पोरबंदर की सांस्कृतिक परंपराओं की रसप्रद नाट्य-प्रस्तुति है। आशा करते है कि पाठकों को यह पसंद आयेगी। विद्यालयों के छात्र इसका मंचन करेंगे अथवा इस के आधार पर कोइ दृश्य श्राव्य प्रदर्शनी की प्रेरणा होगी, यही लेखक की मनोकामना है।